गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन

खोज गाँधीजी की

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव की मासिक पत्रिका; फरवरी, २०१९

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव द्वारा प्रकाशित -

खोज गाँधीजी की

सत्य व अहिंसापरक विचारों को समर्पित

वर्ष-१, अंक १ ◻ फरवरी, २०१९

....

सत्य में प्रेम मिलता है, मृदुता मिलती है।

– महात्मा गाँधी

....

इस अंक में- ....पृष्ठ

संपादकीय...

मेरी परेशानी १

कस्तूरबा जीवन-झांकीः समय के दायरे में – *(डॉ. सुदर्शन आयंगार)*..२

कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धांजलि ३

आज की समाज रचना – *(डॉ. भवरलालजी जैन)*.................१०

फाउण्डेशन की गतिविधियां..................................११-१६

....

संस्थापक
स्व. डॉ. भवरलालजी जैन

मार्गदर्शक
न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी

प्रबंध संपादक
अशोक जैन

संपादक
अश्विन झाला

संपादकीय मंडल
डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय, भुजंगराव बोबडे

कला एवं अक्षर-सज्जा
भूषण मोहरीर

संपादकीय कार्यालय
गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन,
गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स संख्या 118, जलगाँव – 425 001.
दूरभाष : 0257-2260011/22, 2264801/03, मो.: 9404955272
फैक्स : 0257-2261133
वेबसाइट : www.gandhifoundation.net
ई-मेल : info@gandhifoundation.net
CIN No.: U73200MH2007NPL169807

....

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह मासिक मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि.जलगाँव-४२५१०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव-४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक – अश्विन भामाभाई झाला।

....

सभी चित्र गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन संग्रह से।

संपादकीय...

गाँधी युग की आकाशगंगा का एक सितारा इस पृथ्वी से विदाई ले चुका है। माना कि वह तेजस्वी सितारा अपनी अनंत यात्रा पर चला गया, लेकिन वे अपने प्रकाश से हम सभी के लिए ध्रुव तारे के समान बनकर दिशा निर्देश करते रहेंगे।

न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी जी की जीवनयात्रा में उतनी सामर्थ्यता है कि वे कई लोगों के लिए प्रेरक बनी रहेगी। अपने जीवन के दौरान उन्होंने घर घर पढ़ने एवं विचार-विमर्श करने लायक साहित्य का निर्माण किया है। इतना ही नहीं उनकी लेखनी में जीवन को ताजगी प्रदान करने वाला सत्व का दर्शन होता है। वे ऐसा मूल्य आधारित जीवन जीए कि उनकी जीवनी याद करते ही गाँधीजी की याद आ जाती है।

व्यक्ति कब जन्म लिया और कब मृत्यु प्राप्त किया यह इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है, बल्कि वह कैसा जीया है यह मायने रखता है। न्यायमूर्ति जी के जीवन से यह अनुभूति होती है। वे शौर्य की भांति जीवन जीए है। उनके जीव के सार को काव्यमय पंक्तियों में अगर कहना है तो यही कह सकते है,

उनको क्या रोक सकता है अँधेरा।
जो खुद के साथ रखता है अपना उजाला।

ऐसी व्यक्ति को समुदाय कभी नहीं भूल पाएगी क्योंकि संकट, संताप, घृणा, धिक्कार जैसे तत्वों को वह पहले ही पार कर चुके थे और खुद के भीतर आत्मबल का संचार कर चुके थे। आपका जीवन हम सभी को विश्वास, श्रद्धा, प्यार, हूँफ, बल प्रदान करता रहेगा।

धर्माधिकारी जी ने एवं बड़े भाऊ ने गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन का एक संविधान तैयार किया है और उस आधारित स्वरूप व गतिविधियों को अंजाम दिया जा रहा है। फाउण्डेशन की हर एक गतिविधि पर उनकी नजर होती थी उतना ही नहीं बल्कि हर गतिविधि का स्वरूप क्या होगा, उससे क्या साध्य किया जाएगा, उसके लिए आर्थिक घटक क्या होगा, इस तरह की हर रूपरेखा उनके मार्गदर्शन में ही तैयार होती थी। यह हम सभी के लिए गौरवशाली बात रही कि आपकी उपस्थिति में हमें कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गाँधीजी की प्रासंगिकता के संदर्भ में जब भी बात आती थी तब वे कहते थे कि 'गाँधीजी की प्रासंगिकता से पहले हम स्वयं क्या करते है और हमारी प्रासंगिकता क्या है उसे देखें। आज गाँधी होते तो क्या करते की बजाए, आज मैं क्या कर रहा हूँ यह अधिक मायने रखता है।' ज्ञान पिपासु, संशोधक वृत्ति रखते थे 'खोज गाँधीजी की' इस पत्रिका का नाम उनके द्वारा ही दिया गया है। हम गाँधी विचार को आपके नजरिए से समझते हुए इस पत्रिका को दिए गए शीर्षक को सार्थक करने का प्रयास करते रहेंगे।

'खोज गाँधीजी की' शुरुआती दौर से ही त्रैमासिक पत्रिका रही है। पिछले अंक के साथ हमने पाठकों को अभिप्राय पत्रक प्रेषित किया था। उनमें इस पत्रिका के संदर्भ में स्वरूप, सामग्री की गुणवत्ता, शुल्क आदि के बारे में राय माँगी थी। कई पाठकों ने बहुमूल्य अभिप्राय हमें भेजे हैं। बहुधा पाठकों ने इसके स्वरूप के संदर्भ में यह पत्रिका मासिक हो तो अच्छा है ऐसा प्रतिभाव प्रस्तुत किया है। आप सभी के इस सुझाव के आधार पर इस पत्रिका को त्रैमासिक से मासिक में तबदील कर दी गई है। आपके इसी स्नेह के साथ हम कटिबद्धता से इस मासिक पत्रिका के माध्यम से गाँधी विचारों को अधिक प्रबल रूप से प्रस्तुत करते रहेंगे।

धन्यवाद।

(अश्विन झाला)

मेरी परेशानी

*'**खोज गाँधीजी की**' के प्रत्येक अंक में महात्मा गाँधी द्वारा लिखे 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से एक लेख धारावाहिक रूप में दिया जा रहा है। इसके पीछे उद्देश्य यह है कि जनमानस महात्मा गाँधी की आत्मकथा से उन्हीं के शब्दों में परिचित हो सके। विलायत के दौरान मोहनदास के अनुभव की गाथा को दर्शाता हुआ प्रस्तुत है आत्मकथा से अगला प्रकरण। – **संपादक***

बारिस्टर कहलाना आसान मालूम हुआ, पर बारिस्टरी करना मुश्किल लगा। कानून पढ़े, पर वकालत करना न सीखा। कानून में मैंने कई धर्म सिद्धांत पढ़े, जो अच्छे लगे। पर यह समझ में न आया कि इस पेशे में उनका उपयोग कैसे किया जा सकेगा। 'अपनी सम्पत्ति का उपयोग तुम इस तरह करो कि जिससे दूसरे की सम्पत्ति को हानी न पहुँचे'–यह एक धर्म–वचन है। पर मैं यह न समझ सका कि वकालत का पेशा करते हुए मुवक्किल के मामले में इसका उपयोग कैसे किया जा सकता होगा। जिन मुकदमों में इस सिद्धांत का उपयोग हुआ था, उन्हें मैं पढ़ गया। पर उससे मुझे इस सिद्धांत का उपयोग करने की युक्ति मालूम न हुई।

इसके अलावा, पढ़े हुए कानूनों में हिन्दुस्तान के कानून का तो नाम तक न था। मैं यह जान ही न पाया कि हिन्दु शास्त्र और इस्लामी काननू केसे हैं। न मैंने अर्जी–दावा तैयार करना सीखा। मैं बहुत परेशान हुआ। फिरोजशाह मेहता का नाम मैंने सुना था। वे अदालतों में सिंह की तरह गर्जना करते थे। विलायत में उन्होंने यह कला कैसे सीखी होगी? उनके जितनी होशियारी तो इस जीवन में आ नहीं सकती। पर एक वकील के नाते आजीविका प्राप्त करने की शक्ति पाने के विषय में भी मेरे मन में बड़ी शंका उत्पन्न हो गयी।

यह उलझन उसी समय से चल रही थी, जब मैं कानून का अध्ययन करने में लगा था। मैंने अपनी कठिनाइयां एक–दो मित्रों के सामने रखीं। उन्होंने सुझाया कि मैं दादाभाई नौरोजी की सलाह लूं। यह तो मैं पहले ही लिख चुका हूँ कि दादाभाई के नाम एक पत्र मेरे पास था। उस पत्र का उपयोग मैंने देर में किया। ऐसे महान पुरुष से मिलने जाने का मुझे क्या अधिकार था? कहीं उनका भाषण होता, तो मैं सुनने जाता और एक कोने में बैठकर आंख और कान को तृप्त करके लौट आता। विद्यार्थियों से सम्पर्क रखने के लिए उन्होंने एक मण्डल की भी स्थापना की थी। मैं उसमें जाता रहता था। विद्यार्थियों के प्रति दादाभाई की चिन्ता देखकर और उनके प्रति विद्यार्थियों का आदर देखकर मुझे आनन्द होता था। आखिर मैंने उन्हें अपने पास का सिफारिशी पत्र देने की हिम्मत की। मैं उनसे मिला। उन्होंने मुझसे कहा था: 'तुम मुझसे मिलना चाहो और कोई सलाह लेना चाहो तो ज़रूर मिलना।' पर मैंने उन्हें कभी कोई कष्ट नहीं दिया। किसी भारी कठिनाई के सिवा उनका समय लेना मुझे पाप जान पड़ा। इसलिए उक्त मित्र की सलाह मानकर दादाभाई के सम्मुख अपनी कठिनाइयां रखने की मेरी हिम्मत न पड़ी।

उन्हीं मित्र ने या किसी और ने मुझे सुझाया कि मैं मि. फ्रेडरिक पिंकट से मिलूं। मि. पिंकट कंजर्वेटिव (अनदुार) दल के थे। पर हिन्दुस्तानियों के प्रति उनका प्रेम निर्मल और निःस्वार्थ था। कई विद्यार्थी उनसे सलाह लेते थे। अतएव उन्हें लिखकर मैंने मिलने का समय मांगा। उन्होंने समय दिया। मैं उनसे मिला। इस मुलाकात को मैं कभी भूल नहीं सका। वे मुझसे मित्र की तरह मिले। मेरी निराशा को तो उन्होने हंसकर ही उड़ा दिया। ''क्या तुम यह मानते हो कि सबके लिए फिरोजशाह मेहता बनना ज़रूरी है? फिरोजशाह मेहता या बदरुद्दीन तैयबजी तो एक–दो ही होते हैं। तुम निश्चय समझो कि साधारण वकील बनने के लिए बहुत अधिक होशियारी की ज़रूरत नहीं होती। साधारण प्रामाणिकता और लगन से मनुष्य वकालत का पेशा आराम से चला सकता है। सब मुकदमें उलझनों वाले नहीं होते। अच्छा, यह तो बताओ कि तुम्हारा साधारण वाचन क्या है?''

जब मैंने अपनी पढ़ी हुई पुस्तकों की बात की, तो मैंने देखा कि वे थोड़े पर वह निराश हुए। पर वह निराशा क्षणिक थी। तुरंत ही उनके चेहरे पर हंसी छा गयी और वे बोले:

''अब मैं तुम्हारी मुश्किल को समझ गया हूँ। साधारण विषयों की तुम्हारी पढ़ाई बहुत कम है। तुम्हें दुनियां का ज्ञान नहीं है। इसके बिना वकील का काम नहीं चल सकता। तुमने तो हिन्दुस्तान का इतिहास भी नहीं पढ़ा है। वकील को मनुष्य–स्वभाव का ज्ञान होना चाहिए। उसे चेहरा देखकर मनुष्य को परखना आना चाहिए। साथ ही, हरएक हिन्दुस्तानी को हिन्दुस्तान के इतिहास का भी ज्ञान होना चाहिए। वकालत के साथ इसका कोई सम्बन्ध नहीं है, पर तुम्हें इसकी जानकारी होनी चाहिए। मैं देख रहा हूँ कि तुमने के और मेलेसन की १८५७ के गदर की किबात भी नहीं पढ़ी है। उसे तो तुम फौरन पढ़ डालो और जिन दो पुस्तकों के नाम देता हूँ, उन्हें मनुष्य की परख के खयाल से पढ़ जाना।'' यों कहकर उन्होंने लेवेटर और शेमलपेनिक की मुख–सामुद्रिक–विद्या (फीजियोग्नॉमी) विषयक पुस्तकों के नाम लिख दिये।

मैंने उन वयोवृद्ध मित्र का बहुत आभार माना। उनकी उपस्थिति में तो मेरा भय क्षणभर के लिए दूर हो गया। पर बाहर निकलने के बाद तुरन्त ही मेरी घबराहट फिर शुरू हो गयी। चेहरा देखकर आदमी को परखने की बात को रटता हुआ और उन दो पुस्तकों का विचार करता हुआ मैं घर पहुँचा। दूसरे दिन लेवेटर की पुस्तक खरीदी। शेमलपेनिक की पुस्तक उस दुकान पर नहीं मिली। लेवेटर की पुस्तक पढ़ी, पर वह तो स्नेल से भी अधिक कठिन जान पड़ी। रस भी नहीं के बराबर ही मिला। शेक्सपियर के चेहरे का अध्ययन किया। पर लंदन की सड़कों पर चलने वाले शेक्सपियरों को पहचाने की शक्ति तो मिली ही नहीं।

लेवेटर की पुस्तक से मुझे कोई ज्ञान नहीं मिला। मि. पिंकट की सलाह का सीधा लाभ मुझे कम ही मिला, पर उनके स्नेह का बड़ा लाभ मिला। उनके हंसमुख और उदार चेहरे की याद बनी रही । मैंने उनके इन वचनों पर श्रद्धा रखी कि वकालत करने के लिए फिरोजशाह मेहता की होशियारी और याददाश्त वगैरा की ज़रूरत नहीं है; प्रामाणिकता और लगन से काम चल सकेगा। इन दो गुणों की पूंजी तो मेरे पास काफी मात्रा में थी। इसलिए दिल में कुछ आशा जागी।

के और मेंलेसन की पुस्तक मैं विलायत में पढ़ नहीं पाया। पर मौका मिलते ही उसे पढ़ डालने का निश्चय कर लिया था। यह इच्छा दक्षिण अफ्रीका में पूरी हुई।

इस प्रकार निराशा में तनिक–सी आशा का पुट लेकर मैं कांपते पैरों 'आसाम' जहाज से बम्बई के बन्दरगाह पर उतरा। उस समय बन्दरगाह में समुद्र क्षुब्ध था, इस कारण लांच (बड़ी नाव) में बैठकर किनारे पर आना पड़ा।

–'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से साभार, पृष्ठ क्र.७२–७४

कस्तूरबा जीवन-झांकी: समय के दायरे में

बा-बापू १५० के अवसर पर फाउण्डेशन के संचालक मंडल के सदस्य डॉ. सुदर्शन आयंगार के द्वारा कस्तूरबा की जीवन-झांकी तैयार की गई है। इस प्रयास में तीन अधिकृत दस्तावेजों का आधार लिया गया है। उनमें गाँधीजी की दिनवारी, संपूर्ण गाँधी वाङ्मय तथा अरुण गाँधी द्वारा लिखी गई Kasturba - A Life का समावेश होता है। उपरोक्त स्रोतों का उपयोग कर हमने बा की दिनवारी को हिंदी में लोगों के बीच रखने का प्रयास किया है। हम खोज गाँधीजी की में कस्तूरबा की दिनवारी को क्रमशः प्रस्तुत कर रहे है। **– संपादक**

१९१५ – ९ जनवरी को बंबई बंदरगाह पर बा और गाँधीजी उतरे। जगह-जगह सत्कार हुआ।

१७ जनवरी को नडीयाद, मेहमदाबाद और अहमदाबाद होते हुए बा गाँधीजी के संग राजकोट और २२ को पोरबंदर पहुँची और परिवार के साथ मिलन हुआ। राजकोट में मोढ जाति (गाँधी कुटुंब की जाति) की बहनों ने बा को मानपत्र दिया। २५ को गोंडल में औरतों ने बा का सम्मान किया। २९-३० राजकोट औरतों ने बा को मानपत्र दिया। २ फरवरी को अहमदाबाद में औरतों ने बा को मानपत्र दिया। ७ को मुंबई, ९-१० पूना और १५ को मुंबई से शांतिनिकेतन के लिए रवाना। १७ फरवरी को गाँधीजी के साथ शांतिनिकेन पहुँच कर फिनिक्स के आश्रमवासियों से मिलन हुआ। २० को गोखले की मौत की खबर सुन कर गाँधीजी के साथ पूना के लिए रवाना। २२ फरवरी से ३ मार्च पूना रहकर ४ को मुंबई पहँचना हुआ और ६ को फिर शांतिनिकेतन को रवाना हुए। ६ मार्च को कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर के साथ मुलाकात हुई। मार्च महीने से मई की शुरुआत के पहले सप्ताह तक गाँधीजी के साथ बा जहाँ संभव हुआ मुसाफरी में रहीं। कलकत्ता, रंगून, हरिद्वार, ऋषिकेश, गुरुकुल कांगडी, दिल्ली, मद्रास और दक्षिण में कई जगहों की मुलाकात में साथ रहीं। मई २५ को में अहमदाबाद के कोचरब गाँव में एक वकील के मकान में आश्रम की स्थापना हुई और बा वहाँ स्थायी हुईं। फिनिक्स के साथी आ जुडे, कुल २५ लोगों का बा का परिवार फिर से बसा। सितंबर में एक दलित परिवार को गाँधीजी ने आश्रम में दाखिल किया और बा सहित कई लोगों को परेशानी हुई, बाद को बा संभल गई और उस परिवार के बेटी लक्ष्मी को अपनी बेटी बनाकर पाला। ३ दिसंबर को वांकानेर की एक सभा में बा को मानपत्र दिया गया।

१९१६ – अधिकांश समय कोचरब आश्रम में ही बीता ऐसी मालूमात मिलती है।

१९१७ – पहले छः महीने कोचरब और फिर साबरमती आश्रम की स्थापना और उसके विकास में औरों के साथ बा जुटीं। परंतु अप्रैल में गाँधीजी कलकत्ता गए तब बा साथ में गई ऐसा पता चलता है क्योंकि हरिलाल उनकी पत्नी गुलाब और उनके बच्चे कलकत्ता में थे। वहाँ से वे अहमदाबाद लौट गईं।

नवम्बर ८ तारीख को गाँधीजी के साथ वह पटना होती हुई चंपारण पहुँची। गाँधीजी शिक्षा और आरोग्य को लेकर काम करना चाह रहे थे। बा तो साक्षर नहीं थीं पर उनकी स्वच्छता की सूझबूझ बड़ी जोरदार थी। दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने सफाई का काम बखूबी किया था। आरोग्य और नर्स की तालीम भी बढिया हुई थी। देश भर से नायाब लोग स्वयंसेवक के

कस्तूरबा गाँधी

तौर पर जुड़े, बा ने भितिहरवा गाँव की पाठशाला की जवाबदारी उठाई और गाँवों की बहनों में आरोग्य और सफाई का अभियान शुरू किया। यह अभियान पूरे चंपारण जिले में फैल गया। बा इतने प्रभाविक ढंग से काम कर रही थीं कि इरविन नामक एक अंग्रेज नीलहे ने अख़बार में उनके बारे में अपमानजनक चिट्ठी लिखी। गाँधीजी ने उसका योग्य जवाब दिया। बा और आश्रम के साथियों ने जम कर आरोग्य और शिक्षा का काम किया।

१९१८ – मार्च के अंत या अप्रैल में बा वापस साबरमती आश्रम आ गई ऐसा जान पड़ता है। जून १८ को हरिलाल की पत्नी गुलाब और उनके बच्चे साबरमती आश्रम आ पहुँचे। हरिलाल एकदम बेजवाबदार हो गए थे। गुलाब और बच्चों की हालत बदतर हो गई थी। बा तुरंत उनकी सार-संभाल में जुट गईं। गाँधीजी को अगस्त के मध्य में बहुत ही बुरी तरह से पेचिश लगी। वे इतने बीमार हो गए कि बेटों को चिठ्ठी लिखी गई कि जल्दी आयें क्योंकि पिता का अंतकाल आ गया है। बा ने जी-जान से गाँधीजी की तीमारदारी की। वे ठीक होने लगे। परंतु अक्तूबर में बा बहुत दुःखी हो गईं। उनका पोता शांति देशभर में फैले जानलेवा इन्फ्लुएन्ज़ा की चपेट में आ गया और थोड़े दिन बुखार में तड़पने के बाद मर गया। कुछ ही दिनों बाद बच्चे की मां और हरिलाल की पत्नी गुलाब भी उसी बीमारी में चल बसी। बा के लिए यह एक आघात था। बा का यह समय राजकोट में बीता।

क्रमशः

सुविचार

इतिहास में कई वीरांगनाओं के वीर कार्यों का जिक्र किया गया है। मुझे लगता हैं कि श्रीमती गाँधी सारे विश्व में सबसे बड़ी वीरांगनाओं के रूप में इतिहास में स्थान प्राप्त करेंगी।

– फिरोजशाह मेहता
(सन १९१३ में मुंबई के टाउन हॉल में दिया गया भाषण)

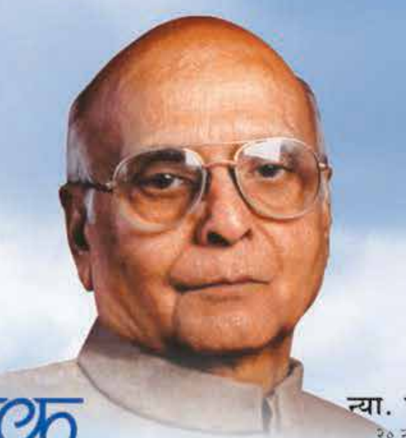

कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धांजलि

न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी
२० नवम्बर १९२७ - ३ जनवरी २०१९

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के चेयरमैन, प्रख्यात गाँधीवादी चिंतक न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी का निधन ३ जनवरी रात १.३० बजे नागपुर स्थित अस्पताल में हो गया। न्यायमूर्ति धर्माधिकारी जी अब हमारे बीच शरीर से नहीं रहे। वर्तमान विषम परिस्थिति में उनका होना हमारे लिए एक शीतल छाया के समान था, उनका चले जाना देश के लिए, न्याय व्यवस्था के लिए एवं गाँधी विचार के लिए अपूरणीय क्षति है।

आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में न्यायनिष्ठता, आचरणगत शुचिता तथा गाँधीवादी मूल्यों की समकालीन प्रासंगिता एक साथ मौजूद थी। धर्माधिकारी जी हम सब के लिए ध्रुव के तारे समान थे। आपके द्वारा दिए गए विचारों की विरासत को गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन परिवार समर्पण भाव से आगे बढ़ाते हुए अपना अलौकिक योगदान प्रदान करता रहेगा। आप हमारे विचारों में, हृदय में और कार्यों में सदा जीवित रहेंगे।

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के प्रांगण में स्थित कस्तूरबा सभागृह में ७ जनवरी २०१९ को न्यायमूर्ति जी के सम्मान में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया था। इस सभा में कई सारे लोगों ने न्यायमूर्ति जी को अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की है, उनमें से कुछ यहाँ पर प्रस्तुत कर रहे हैं।

''मेरा तीसरा बेटा चंद्रशेखर महाराष्ट्र और महाराष्ट्र के बाहर भी काफी लोग उसके भाषणों के कारण उसे जानते हैं। मैंने उसके भाषण सुने हैं। उसकी भाषण की शैली कुछ मेरी जैसी है, ऐसा श्रोताओं को भास होता है। परंतु अपने अनुभवों और स्वतंत्र चिंतन-मनन के कारण चंदु मुझसे काफी आगे निकल गया है, ऐसा लगता है। अब तो कहीं-कहीं मुझे भी उसके कारण उसके पिता के नाम से लोग पहचानते हैं। मेरे लिए इससे ज्यादा धन्यता का विषय क्या हो सकता है?''

उपरोक्त कथन दादा धर्माधिकारी जी का अपने बेटे चंद्रशेखर धर्माधिकारी के प्रति है। एक पिता के लिए इससे खुशी की बात और क्या हो सकती है कि वह अपने बेटे के नाम से जाना जाए? आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श दामाद, आदर्श पिता और आदर्श दादा कैसा हो सकता है इसका उत्कृष्ट उदाहरण चंद्रशेखर धर्माधिकारी थे।

एक व्यक्ति अपने जीवन में इतनी आदर्शता की उन महानतम चिढ़ियों को चढ़ता है और वे भी सादगीपूर्ण अस्तित्व को टिकाते हुए। ऐसे महान आत्मा को राष्ट्र कभी नहीं भूल पाएगा।

श्रद्धांजलि सभा के दौरान न्यायमूर्ति धर्माधिकारी जी को भावांजलि प्रदान करते शोक मग्न गणमान्य, कस्तूरबा सभागृह, गाँधी तीर्थ

दादा एक सामाजिक रत्न थे

१९९२ में तत्कालीन उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ का प्रथम पदवीदान समारंभ आयोजित हुआ था। इस पदवी दान समारंभ में अध्यक्ष के रूप में न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी उपस्थित थे, इस कार्यक्रम में श्रद्धेय बड़े भाऊ भी मौजूद थे। इस कार्यक्रम में न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि गाँधी विचार का अनुसंधान केंद्र इस विद्यापीठ में शुरू होना चाहिए। बड़े भाऊ ने उनका अध्यक्षीय भाषण सुना, उस कार्यक्रम के बाद बड़े भाऊ उनसे मिले। यह बड़े भाऊ और न्यायमूर्ति धर्माधिकारी जी की पहली मुलाकात थी इससे पहले कभी किसी भी तरह का कोई संबंध भी नहीं था और मुलाकात भी नहीं हुई थी। इस

गाँधीजी के पूतले का अनावरण कर गाँधी अध्ययन केंद्र का आरंभ, उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, २००६

पहली मुलाकात में बड़े भाऊ ने कहा कि आपने अपने अध्यक्षीय भाषण में जो बात रखी वह कार्य हम करना चाहते है। इस मुलाकात से इस संबंध और सफर की शुरुआत हुई। कुछ साल बाद विद्यापीठ में गाँधी केंद्र की शुरुआत हुई। वहाँ पर गाँधीजी के पुतले का अनावरण किया गया और मोहन से महात्मा प्रदर्शनी के साथ साथ अपने पास उपलब्ध गाँधी साहित्य का भी प्रदर्शन तैयार किया गया। कुछ सालों बाद विद्यापीठ एवं गाँधी केंद्र के बीच कुछ मतभेद होने की वजह से बड़े भाऊ ने न्यायमूर्ति धर्माधिकारी जी से कहा कि जो भी यहाँ निर्माण किया गया है वह विद्यापीठ को अर्पित कर हम एक नया गाँधी शोध केंद्र जैन हिल्स पर साकार करना चाहते है। इस अनुमति के बाद गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन जैन हिल्स पर स्थापित किया गया। इस तरह से दोनों के बीच में जो संवाद प्रक्रिया होती थी, आदान-प्रदान होता था उससे एक अंतरराष्ट्रीय फाउण्डेशन का निर्माण हुआ। जो वैश्विक स्तर पर सत्य, अहिंसा और आपसी सहयोग की भावना के आधार पर वैश्विक शांति प्रस्थापित करने की दिशा में विभिन्न तरह की गतिविधियों को कार्यान्वित कर रहा है। जब भी उनका जलगाँव का दौरा होता था वह जैन हाउस पर ही रहते थे, उनका संयुक्त परिवार के प्रति एक अलग लगाव था और जब भी जैन परिवार से मिलते थे तब वे बहुत अच्छा महसूस करते थे। सभी को एक साथ देखकर वे आश्वस्त हो जाते थे और कई मुद्दों पर चर्चा करते थे। उन्होंने इतना गहन और समृद्ध ज्ञान हम लोगों को दिया कि कभी भूल ही नहीं सकते। इसी ज्ञान के आधार पर हम कई बातें सीखें है और हमने अपने जीवन में परिवर्तन किया है, उनके साथ का पल हमें हर दम प्रेरित करता रहा, उनके मुताबिक हम जो भी कर सके उनका पूरा श्रेय धर्माधिकारी साहब को जाता है। महिलाओं के प्रति उनका एक अलग आदर था। यही भाव के आधार पर उन्होंने कहा था कि फाउण्डेशन के संचालक मंडल में महिला को स्थान होना चाहिए, इसलिए दादा (न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी) ने ज्योति जैन के नाम का सुझाव दिया और सक्रिय भूमिका रखते हुए उनको सम्मिलित किया। सौभाग्य की बात यह भी है की ऐसे कई प्रसंग आए, जब उनके वाणी और विचार का लाभ जलगाँव नगरजनों को मिला।

उनके दिल में एक बात हमेशा थी कि बड़े भाऊ ने इतना बड़ा कार्य तो कर दिया है पर भाऊ के बाद इस कार्य को कौन आगे बढाएंगे, इस संदर्भ में हमारी कई बार बात भी होती थी, फिर भी उन्होंने साम्ययोग साधना के संपादक रमेश जी दाणी को मेरा साक्षात्कार करने के लिए कहा। रमेश जी के साथ करीब ३ घंटे तक मेरा साक्षात्कार हुआ और यह साम्ययोग साधना में प्रकाशित हुआ। दादा ने यह पढ़ा, जब जलगाँव आए तो उन्होंने कहा कि मैंने आपका साक्षात्कार पढ़ा है, अब मैं निश्चित हो गया कि भाऊ के बाद इस गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन की विरासत को जैन परिवार आगे ले जाने के लिए कटिबद्ध है।

८ सितम्बर २०१८ के दिन धर्माधिकारी साहब को जलगाँव आने के संदर्भ में मेरी बात हुई और कहा कि दादा अनुभूति स्कूल में एक

गाँधी तीर्थ के उद्घाटन के पूर्वे विचार-विमर्श करते हुए धर्माधिकारी जी और भवरलाल जी जैन

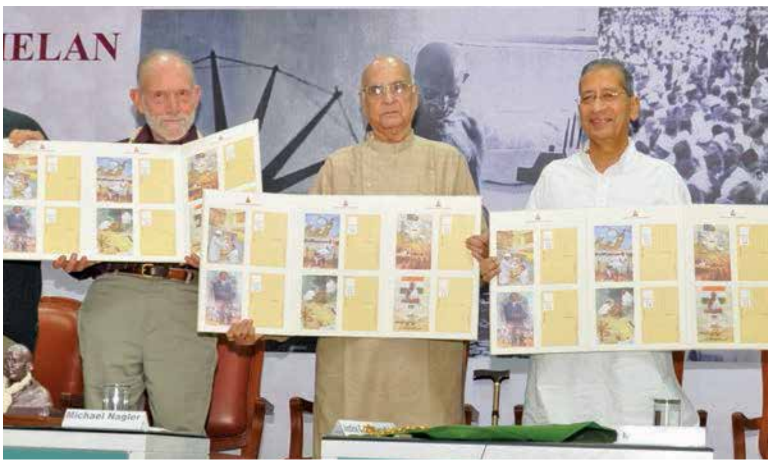

फाउण्डेशन द्वारा जारी किए गाँधीजी पर विशेष पोस्टकार्ड के विमोचन के दौरान

गाँधी जयंती के अवसर पर जन समूह को संबोधित करते हुए न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी, गाँधी उद्यान, जलगाँव

विशाल पुस्तकालय का उद्घाटन करना है और इस पुस्तकालय के लिए बड़े भाऊ ने जगह और उनकी रचना पहले से तैयार कर के रखी थी। वह कार्य अब पूर्ण हुआ है, हम चाहते हैं कि इस इमारत का उद्घाटन आपके हाथों हो, इसके साथ साथ संचालक मंडल की बैठक भी आयोजित कर सकते है। दादा ने इस आमंत्रण का स्वीकार किया और वे जलगाँव आए। उस दिन सुबह ज्ञानानुभूति पुस्तकालय का उद्घाटन उनके कर कमलों द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. अनिल काकोडकर, डॉ. डी. आर. मेहता, सुदर्शन आयंगार, दलु बाबा, जैन परिवार के सदस्य, मित्र वर्ग सभी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम के बाद जैन हिल्स पर आयोजित पोला त्यौहार (पोला मूलतः खेती-किसानी से जुड़ा त्यौहार है। इस दिन बैलों का शृंगार कर उनकी पूजा की जाती है। जैन हिल्स पर यह उत्सव अनोखे अंदाज में मनाया जाता है।) में सम्मिलित हुए।

संचालक मंडल की बैठक के दौरान जैन परिवार में नई पधारी हुई बहू अंबिका जैन का परिचय दादा से करवाया गया और इस बात का जिक्र भी किया कि अंबिका ने जैन इरिगेशन के सभी अनुष्ठानों का अध्ययन करने के बाद गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन में अपना योगदान प्रदान करने का चयन किया। इस बात से दादा अत्यंत खुश हुए और इस बैठक के मुद्दे पर चर्चा ना करते हुए उन्होंने अधिकांश समय अंबिका को मार्गदर्शन किया, उनमें गाँधी विचार, फाउण्डेशन के प्रति बड़े भाऊ की संकल्पना, भविष्य में कौन से विषय पर कार्य करना है, आपकी भूमिका क्या रहेगी, इन सभी मुद्दों पर अंबिका से संवाद किया। महिलाओं की भूमिका राष्ट्र निर्माण में प्राप्त होती है तब दादा अधिक प्रसन्न होते थे। उस दिन भी उनके मुख पर प्रसन्नता का भाव सुस्पष्ट रूप में दिखाई देता था, वे सुनिश्चित थे कि बड़े भाऊ ने जिस तीर्थ का निर्माण किया है उसमें उनके परिवार से युवा पीढ़ी भी जुड़ रही है।

ज्ञानानुभूति ग्रंथालय का उद्घाटन करते हुए न्या. धर्माधिकारी जी

जब आखिरी बार वे जलगाँव आए तब उन्होंने कहा कि जलगाँव की यह मेरी अंतिम मुलाकात है इसके बाद मुझे नहीं लगता मैं जलगाँव आ पाऊंगा, आप बैठक का आयोजन मुंबई में करे या मैं विडीयो कांफ्रेंस के माध्यम से संवाद करूंगा।

जब मुझे संदेश प्राप्त हुआ की दादा को नागपुर की एक अस्पताल में दाखिल किया है तब मैं, मेरी पत्नी और उदय महाजन उनको मिलने के लिए तुरंत ही निकल गए, बीच रास्ते में पहुँचे होंगे की रात को १.३० बजे संदेश प्राप्त हुआ 'दादा अब इस दुनिया में नहीं रहे।' हम नागपुर उनके घर पर पहुँचे दादा के अंतिम दर्शन किए और उनके परिवार से मुलाकात हुई, दादा के अलावा उनके परिवार में हम किसी को जानते नहीं थे और ना ही कभी किसी से मिले थे। हम उनके बड़े बेटे सत्यरंजन जी से मिले, बातचीत के दौरान उन्होंने कहा कि मेरे पिताजी ने हमें एक बात बताई की मेरे जाने के बाद, जैन परिवार के साथ जैसे मेरे संबंध रहे है वैसे ही आप उनके साथ इस संबंध को कायम रखिए, सत्यरंजन जी ने कहा बाबा हम कभी जैन परिवार के किसी भी सदस्य से नहीं मिले हैं और ना ही उनसे किसी भी तरह का परिचय है, तो संबंध कैसे रखे? तब बाबा ने कहा केवल मुलाकात से ही परिचय बनता है ऐसा नहीं है, वे लोग जो कार्य कर रहे हैं वह इस देश के लिए और विश्व के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। मेरा उस परिवार के साथ जुड़ने का कारण भी यही था और मुझे ऐसा लग रहा है कि वह कार्य पूर्णता की ओर जा रहा है। ऐसे परिवार के साथ संबंध रखना हमारे लिए अच्छी बात है। सत्यरंजन जी ने और एक बात मुझसे कही कि बाबा ने हमारे परिवार से ज्यादा बजाज परिवार और जैन परिवार को अधिक प्यार दिया।

दादा के पास समाज को देखने का एक अलग नजरिया था, वे एक सामाजिक रत्न थे, बहुत कम लोगों में यह प्रतिभा संपन्नता होती है। ऐसे रत्न का सहवास करने का जलगाँव वासियों को लाभ मिला। यह उनका प्यार और आशीर्वाद ही है हम सब पर की उनके मार्गदर्शन में फाउण्डेशन अपने उद्देश्यों के प्रति जागरूक रूप से आगे बढ़ रहा है। फाउण्डेशन का संचालक मंडल, सलाहकार समिति, सभी सहकारी वृंद हमेशा कार्य करते रहेंगे और अपने कार्य के माध्यम से ही हम सब परम श्रद्धेय दादा को कृतज्ञता पूर्वक सच्ची आदरांजलि, श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

– अशोक जैन

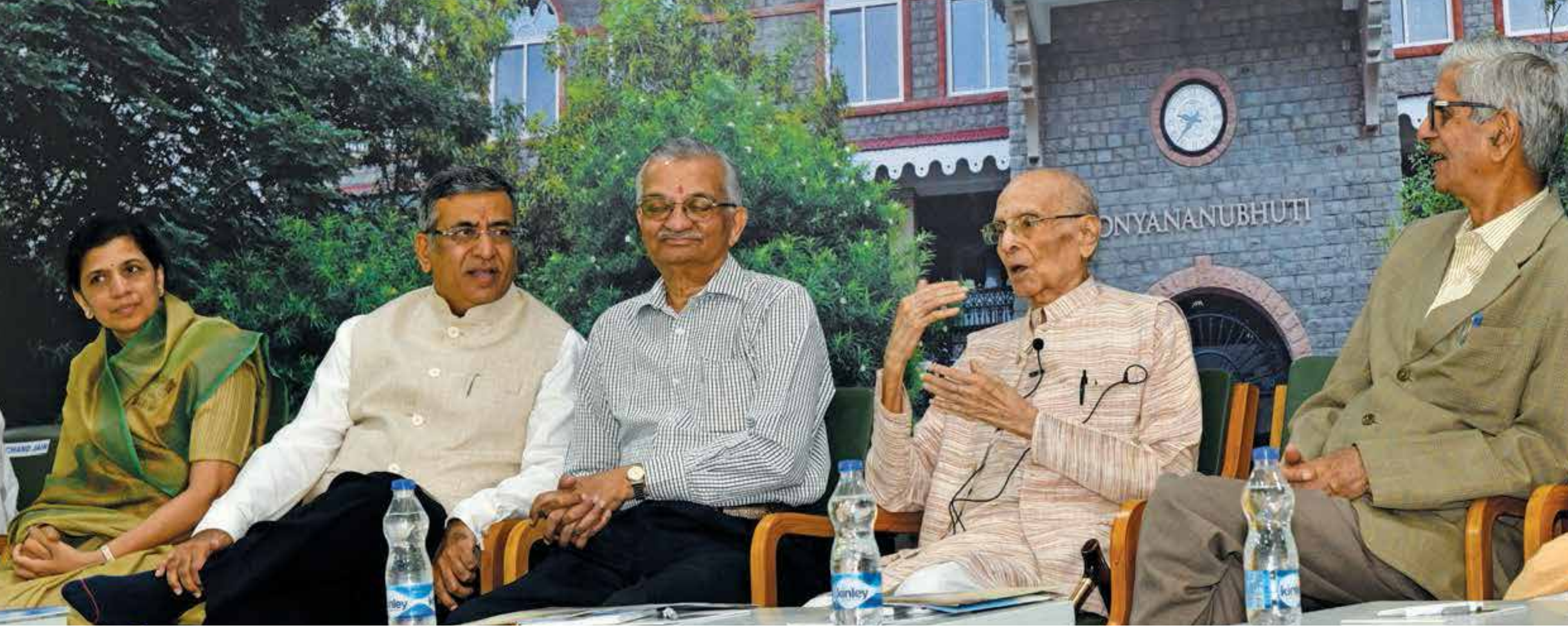

ज्ञानानुभूति ग्रंथालय के उद्घाटन प्रसंग पर आशिर्वचन प्रदान करते न्या. धर्माधिकारी जी

महापुरुषों की श्रृंखला की एक मजबूत कड़ी टूट गई

न्या. चंद्रशेखर जी आज हमारे बीच नहीं रहे। गाँधी विचार को समर्थ रूप से समझाने वाले महापुरुषों की श्रृंखला की एक मजबूत और महत्त्वपूर्ण कड़ी टूट गई हो ऐसा लग रहा है। विशेषतः गाँधी विचार की मूलभूत पार्श्वभूमि और वर्तमान में उसकी आवश्यकता तथा उसे किस प्रकार से अपनाना चाहिए इसका सरल व सबको समझे ऐसा विवेचन करने वाला कोई आज हमारे बीच नहीं रहा। यह एक बड़ी क्षति है जो आसानी से भरपाना कठिन है।

श्रद्धेय भवरलालजी ने जो गाँधी तीर्थ की निर्मिति की उसके पीछे न्यायमूर्ति जी की प्रेरणा का बड़ा हाथ था। गाँधी तीर्थ आज गाँधी विचार का प्रसार, उसका आज के संदर्भ में कार्यान्वयन तथा मानवता को आगे ले जाने की दृष्टि से आवश्यक संशोधन इन सभी पहलुओं पर आगे बढ़ रहा है। इस निर्मिति और कार्यक्रम को, जो आज निश्चय ही इस प्रकार का सबसे अच्छा कार्यक्रम माना जा सकता है, आज का रूप दिलवाने में न्यायमूर्ति जी का बड़ा योगदान है। इस कार्यक्रम को अच्छी तरह से आगे ले जाना यही मेरे विचार में उनके प्रति सबसे अच्छी श्रद्धांजलि होगी।

व्यक्तिगत रूप से, गाँधी परिवार से जुड़े होने के कारण, मुझे सदैव उनका स्नेह मिलता रहा है, उनके प्रेरणादायी सुझावों का लाभ मिलता रहा है। जीवन को सार्थक बनाने की दृष्टि से मुझे उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला है।

आज स्वतंत्रता पश्चात के ७० वर्षों में देश की काफ़ी प्रगति तो हुई है, लेकिन कई मूलभूत प्रश्न शायद और जटिल बन गए हैं। देश में बढ़ रही विविध प्रकार की असमानताएं मेरे विचार में हमारे गाँधीजी के मार्गदर्शन को भुलाने के फलस्वरूप निर्माण हुई है। न्यायमूर्ति जी समय समय पर इस दृष्टि से मार्गदर्शन करते रहे है।

इसी प्रेरणा को सतत आगे बढ़ाते रहना, यह हम सबका कर्तव्य बनता है। मेरी न्यायमूर्ति जी को विनम्र श्रद्धांजलि।

– अनिल काकोडकर

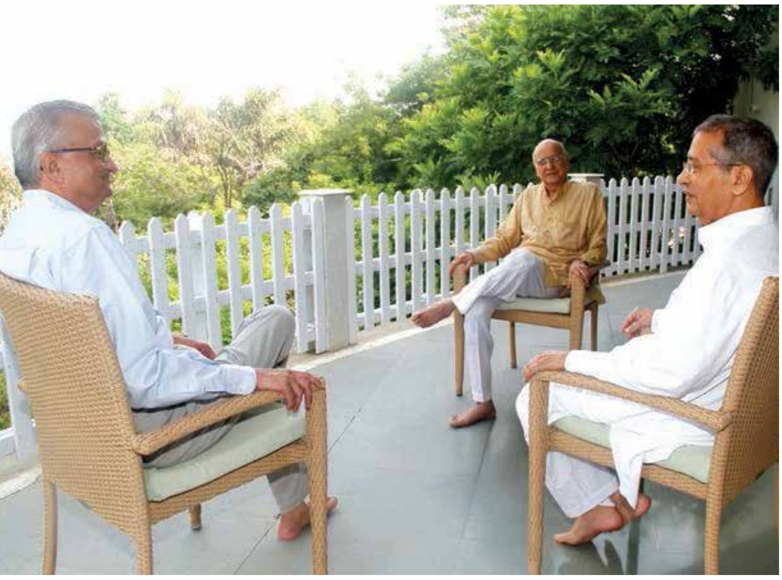

विचार-विर्मश में मग्न अनिल काकोडकर, न्या. धर्माधिकारी जी और भवरलाल जैन, जैन हिल्स

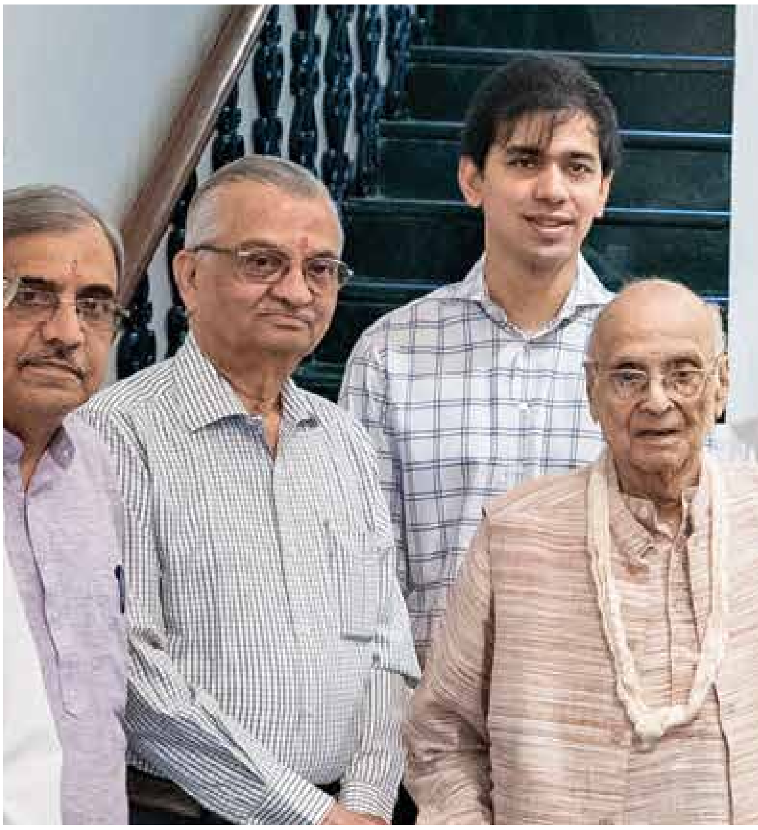

डॉ. सुदर्शन आयंगार, डॉ. अनिल काकोडकर, अथांग जैन तथा न्या. धर्माधिकारी जी

कर्मशील गाँधीजन हमारे बीच से चले गए

सुदर्शन आयंगार

चंद्रशेखर धर्माधिकारी जी की विदाई गाँधी युग के विदाई के अंतिम चरण को दर्शाता है। अब शायद ही कोई विरला रह गया है जिसने गाँधीजी के साथ करीबी जीवन बिताया हो। उनसे मेरा परिचय उनके जीवन के अंतिम दशक में हुआ। उनके बारे में बहुत सुना और उनका लिखा हुआ पढ़ा था। उनके साथ की पहली ही मुलाकात उनके मेधावी होने का परिचय दे देती थी। वकील का तर्क और न्यायमूर्ति की समतुला यही उनकी पहचान थी। जीवन जीने के मामले में वे गाँधी मूल्यों को गहराई से आत्मसात कर चुके थे। दादा धर्माधिकारी के सुपुत्र जो ठहरे। सादगी उनकी पहचान थी।

मुझे उनकी एक बात जो बहुत गहरे छू गयी थी वह उनका अभय था। अपना सच वे बड़ी मजबूती से और निर्भयता से रखते थे। यह विदित है कि एक न्यायाधीश की पीठ से लिखे गए उनके कुछ फैसले और टिप्पणियां भी उनकी इसी सत्यपरायणता और निर्भयता को दर्शाते थे। इस तरह वे सरकार के या किसी और बलों के दबाव में आए हों ऐसा नहीं हुआ। उनकी लेखनी भी बड़ी पैनी और चोटदार थी।

गाँधी विचार आधारित समाज निर्माण के बारे में उनकी समझ एकदम स्पष्ट और उनका आग्रह दृढ़ था। न्यायाधीश की जवाबदारी से मुक्त होने के बाद भी एक लंबी उम्र जीए। देश की चोटी की गाँधी विचार की संस्थाओं में उन्हें सम्मान से आमंत्रित कर अध्यक्ष स्थान दिया गया था। उनमें से कुछ संस्थाओं में बतौर सभ्य मैं भी जुड़ा था। ऐसी संस्थाओं के संचालन की बैठकों में उनके स्पष्ट वक्ता होने का आभास तुरंत ही हो जाता था। कभी कभी ऐसा भी होता था कि गाँधी विचार को इतना मूल से पकड़ते थे कि उसे अमली बनाना असंभव प्रतीत होता था और संचालन समिति का हर एक सभ्य इस मुश्किल को उनके सामने रखता था फिर भी वह अपनी स्थिति नहीं बदलते थे। वे अडियल नहीं थे, बहुमत के निर्णय का वे सम्मान करते थे पर यह जरूर कहते कि निर्णय में समाधान किया गया है।

अपनी इस उम्र में भी वे ताजगी और उत्साह से भरे थे। हकीकत जानते और बयान भी करते थे पर भविष्य के बारे में और नई पीढ़ी के बारे में आशावादी थे।

चंद्रशेखर धर्माधिकारी की विदाई से एक विचारवान, निष्ठावान और कर्मशील गाँधीजन हमारे बीच से चला गया है। हम सभी ने गाँधी मार्ग के एक अनन्य मार्गदर्शक को खोया है। उन्हीं के पद चिन्हों पर चल कर उनकी यात्रा को आगे बढ़ाना ही उनके प्रति श्रद्धांजलि है।

– सुदर्शन आयंगार

देश ने विवेक बुद्धि के परिपालक को खो दिया

भारत के स्वातंत्र्य संग्राम के सैनिक व गाँधीवादी विचारक न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी जी ने ७ दशक से अधिक समय तक गाँधीजी की विरासत का प्रतिनिधित्व किया है।

१९७२ से मुंबई उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में एवं उसके बाद कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश के रूप में स्त्रियों के अधिकार का समर्थन करने वाले, आदिवासी और पिछड़ा वर्ग, कैदी, मतिमंद लोगों को एवं वंचितों को न्याय देने वाले कई ऐतिहासिक फैसले किए हैं।

युवा पीढ़ी के सृजनशील रचनात्मक शक्ति पर विश्वास रखते थे बदौलत ही देश और विदेश के कई युवाओं के साथ संवाद किया करते थे। जीवन की आखिरी सांस तक आदर्श कार्यकर्ता के रूप में २९ संस्था में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, प्रमुख और विश्वस्त के संबंध से योगदान देते रहे। इसी तरह महात्मा गाँधी के पास से आत्मसात किया हुआ आत्मबल के प्रकाश से सत्य और अहिंसा के मार्ग के द्वारा राष्ट्र का नेतृत्व करते रहे। उनकी सेवा की प्रशंसा करते हुए भारत सरकार ने वर्ष २००३ में उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया।

संचालक मंडल की बैठक में उपस्थित गणमान्य सदस्य एवं न्यायमूर्ति जी

डॉ. भवरलाल जैन ने जब उनकी सामाजिक उत्तरदायित्व को गाँधीवादी सिद्धांतों के द्वारा अधिक गतिमान तथा परिणाम कारक बनाने का संकल्प किया, तब डॉ. धर्माधिकारी जी ने उन्हें गाँधी अध्ययन केंद्र निर्माण करने के लिए प्रोत्साहन दिया, जो आगे चलकर गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (गाँधी तीर्थ) के रूप में निर्माण हुआ। अध्यक्ष के रूप में उनके द्वारा लंबे समय तक किए हुए नेतृत्व के द्वारा गाँधीजी के आदर्शों का प्रचार व प्रसार करने वाली एक महत्त्वपूर्ण संस्था के रूप में गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन का विकास हुआ।

'खोज गाँधीजी की' म्यूजियम जैसा प्रभावी स्मारक के द्वारा कार्यशाला, अंतरराष्ट्रीय परिषद, युवा शिविरों के माध्यम से गाँधीजी के संदेश, तत्त्वदर्शन और आदर्शों का गरिमामय व प्रभावशाली प्रस्तुतिकरण करता रहेगा। न्यायमूर्ति जी के अनुरोध पर बड़े भाऊ (भवरलाल जी जैन) ने ग्रामीण पुनरुत्थान तथा गाँधी विचार संस्कार परीक्षा जैसी शैक्षिक गतिविधियों का आरंभ किया था। आपके ही सुझाव से 'बा-बापू १५०' के नाम से प्रारंभ किया गया ग्रामीण पुनरुत्थान का कार्य आदर्श निर्माण कर रहा है। 'बा' मतलब कस्तूरबा, ने गाँधीजी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य किया था। इस प्रतीक के रूप में स्त्री-पुरुष समानता भी ग्राम स्वराज्य की संकल्पना को सार्थक करने के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटना को प्रभाव रूप से आप आगे लाए है।

न्यायमूर्ति धर्माधिकारी जी के निधन से देश ने एक विवेक बुद्धि के परिपालक को, न्याय प्रक्रिया के विद्वान व नेक सलाहकार को, गाँधीवादी समाज के एक दुलारे नेता को और अधिक महत्त्वपूर्ण मतलब गाँधी तीर्थ और जैन परिवार ने एक पितातुल्य मार्गदर्शक को खो दिया है। वे एक दृढ़ तत्त्वनिष्ठा, वैचारिक स्पष्टता, भावनात्मक शुद्धता और जीवनीय आध्यात्मिकता के पुजारी थे। वे एक सत्यनिष्ठ महापुरुष ही थे। हम सभी को हर पल उनकी कमी महसूस होगी।

न्या. धर्माधिकारी जी के दुखद निधन से शोक मग्न देश को सांत्वना देते हुए जैन परिवार और गाँधी तीर्थ उनकी दिवंगत आत्मा को भाव विभोर श्रद्धांजलि अर्पित करता है, और वर्तमान समय से सुसंगत उनके आदर्श व प्रयत्नों से भविष्य अधिक सुंदर निर्माण करने कि पवित्र प्रतिज्ञा करता है।

– अनिल जैन

दलिचंद जैन

यह हमारा सौभाग्य है कि जलगाँव वासियों को ऐसे महानुभावों को मिलने का मौका प्राप्त हुआ। आदरणीय बड़े भाऊ के द्वारा निर्मित इस गाँधी तीर्थ के माध्यम से न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी से संपर्क आया और उन्होंने अत्यंत महत्त्वपूर्ण समय हम लोगों को दिया, उन्होंने हमें संस्कारित किया। हम गाँधी तीर्थ के माध्यम से शाश्वत विचारों का प्रचार-प्रसार करते रहेंगे यही उनके प्रति श्रद्धांजलि होगी।

– दलिचंद जैन

सुगम बरंठ

चंद्रशेखर धर्माधिकारी एक बड़े चिंतक, लेखक, अच्छे वक्ता के नाते पूरे हिंदुस्तान में मशहूर थे। आंदोलन का सहयोगी कैसा हो सकता है?, महिला शक्ति का उपासक कैसा हो सकता है?, कार्यकर्ता के प्रति कृतज्ञता रखने वाला व्यक्ति कैसा हो सकता है? उसका उत्तम उदाहरण चंद्रशेखर धर्माधिकारी है। अध्यवत जानकारी रखनेवाला व्यक्ति, सरकार को खड़े बोल सुनाने वाला आदमी था। आज के युवाओं की भाषा में संवाद करने वाले एवं हर तकनीकों का उपयोग करने वाले व्यक्ति थे। स्पष्ट वक्ता, हमेशा सक्रिय रूप से लिखते रहे। युवाओं के साथ चलते हुए उनको प्रेरित करते थे। ऐसे महान व्यक्ति को आदरभाव से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

– सुगन बरंठ

गौतम बजाज

आदरणीय चंद्रशेखर धर्माधिकारी गए, हमारी दृष्टि से यह बड़ा धक्का है। विनोबा कहते थे ''किसी भी व्यक्ति की मृत्यु कोई दुःख की बात नहीं है। जिस व्यक्ति ने अपने आयुष्य के दौरान उत्तम कार्य किया है, समाज कि सेवा की है उसने अपने जीवन को धन्य किया है। ऐसे व्यक्ति के मृत्यु का दुःख नहीं होना चाहिए।'' उनके पिताजी दादा धर्माधिकारी जी की विरासत को वे अखंड रूप से आगे ले गए। हम सब उनके विचार और आचार को जिंदा रखने का प्रयास करते रहेंगे यही उनके प्रति श्रद्धांजलि होगी।

– गौतम बजाज

के. बी. पाटील

न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी को महात्मा गाँधी का सहवास प्राप्त हुआ था, वे गाँधीजी के आचार व विचार के सच्चे उत्तराधिकारी थे। गाँधी विचार उनकी श्रद्धा का विषय था, सादगीपूर्ण जीवन, स्पष्ट वक्ता और नैतिक आचरण ही उनका परिचय था। जहाँ नेक कार्य का निर्माण होता था वे अपने आपको उसके साथ जोड़ लेते थे। आखिर के कई साल उन्होंने गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के लिए दिए थे, यहाँ कार्यरत गतिविधियां उनको काफी समाधान प्रदान करती थीं। आदरणीय भवरलालजी जैन के प्रति उनका अधिक स्नेह था। मैं अपने आपको खुशनसीब समझता हूँ कि मुझे भी उनका सहवास प्राप्त हुआ। उनके चले जाने से महाराष्ट्र को ही नहीं बल्कि देश को भी बड़ा नुकसान हुआ है। मैं उनकी स्मृति को वंदन करते हुए भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

– डॉ. के. बी. पाटील

ना. धो महानोर

'जीवन उनको ही समझा है जो अभिमान रहित जीता है।'

न्या. धर्माधिकारी गाँधी विचार की ज्योति लेकर, तेज पुंज का दीया लेकर जीवन जिएं। चारित्र्य संपन्न सत्व शील व्यक्ति।

वे कहते थे 'मेरे पास कौन आता है, कौन जाता है, कैसे लोगों को आना चाहिए, कैसे लोगों के पास मुझे जाना चाहिए, ऐसा पथ्य जिसको लेना है वह लें, किंतु मैं लेने वाला नहीं हूँ। कारण में निर्भय हूँ, मैं गाँधी की वैचारिक विरासत को आगे ले जाता हूँ।' ऐसी व्यक्ति आज हमारे बीच नहीं है, उनको हम कभी भूल नहीं सकते, महाराष्ट्र और हमारा देश कभी उनको भूलेगा नहीं, अगर उनकी विचार सृष्टि का भाषांतर कर सारे विश्व के सामने रख सकते हैं तो यह विश्व की कभी उनको भूलेगा नहीं। मैं उनकी परम आत्मा को हृदयपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

– ना. धो. महानोर

शेखर सोनाळकर

उनका बोलना लोगों को अंतर्मुख करने जैसा होता था। दादा धर्माधिकारी के संदर्भ में महिलाओं के प्रति एक विलक्षण आदर था वह आदर की दृष्टि चंद्रशेखर धर्माधिकारी में भी आयी, वे दादा धर्माधिकारी की विरासत को आगे ले गए।

मैं उनकी परम आत्मा को श्रद्धा पूर्वक आदरांजलि अर्पित करता हूँ।

– शेखर सोनाळकर

सतीष मोरे

सौभाग्य से मुझे कई यात्राओं में उनके साथ रहने का मौका प्राप्त हुआ उस दौरान उन्होंने मुझे कार्यकर्ता कैसा होना चाहिए उनके पदार्थ पाठ शिखाए। उनका विचार हमेशा इस दिशा में रहता था कि गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन राष्ट्र को नई दिशा दे सकता है और उन्होंने वैसा किया भी। फाउण्डेशन के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन के कई कार्य किए हैं। हमारे जीवन में आचार और विचार को शुद्ध रूप में आचरण करने के द्वारा ही न्यायमूर्ति जी को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते है।

– सतीष मोरे

चंद्रकांत चौधरी

सर्वोदय परिवार को मार्गदर्शन करने वाले, न्याय के लिए लडने वाले, समाज के पिछड़े वर्ग, शोषित, दीन हीन लोगों के लिए न्यायमूर्ति बाबा थे। हर एक तरह की न्याय की लड़ाई में एवं हमारे सभी कामों में उनका पूर्ण ध्यान रहता था।

पर्यावरण के संदर्भ में गाँधी विचार की एक अनोखी दृष्टि उनके पास थी। इसलिए वे कहा करते थे कि पर्यावरण को नहीं संभालेंगे तो यह पृथ्वी भी नष्ट हो जाएगी। हमारे लिए हमेशा मार्गदर्शक बने रहे ऐसे बाबा को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

– चंद्रकांत चौधरी

शंभु पाटील

समाज में हर तरफ कट्टरता आधारित शक्ति का व्याप हो रहा है ऐसी स्थिति में एक धर्माधिकारी हम में से चले गए, यह हमारी सबसे बड़ी हानि है। वे करीब ९० से अधिक साल के थे, लेकिन वे वृद्ध नहीं थे। उनकी वाणी में कहीं दंभ नहीं था उनकी बुद्धि में कहीं श्लेष नहीं था। अत्यंत कुशाग्र विश्व की और देखने का शुद्धतम नजरिया इन सबके जरिए गाँधी विचार को नए सिले से वे प्रस्तुत करते थे। मैं न्यायमूर्ति धर्माधिकारी जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

– शंभु पाटील

वे समानता आधारित विचार के पूजक थे। उनके कई विचार मैंने सुने हैं और आश्चर्य लगता है इतने सारे गुण एक ही व्यक्ति में दिखाई देते हैं। हम हर समय पर जागृत व संवेदन रूप से देखते हुए जो योग्य है वह कार्य करते रहे एवं उनके विचारों की विरासत को हमारे जीवन में अंगीकृत करते रहे, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

– निशा जैन

ज्योति जैन, शोभना जैन न्यायमूर्ति जी और निशा जैन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स

जन्म और मरण

जिंदगी न जन्म के साथ पैदा होती है
न मृत्यु के साथ मरती है
जन्म लेकर वह जिसे खोजती है
मर कर भी उसी की तलाश करती है

और ईश्वर आसानी से
हमारी पकड़ में नहीं आता
उसकी कृपा यह है कि वह हमें जन्म देता
और फिर मारता है

जन्म और मरण
दोनों खराद के चक्के हैं
ईश्वर हमें तराश–तराश कर
संवारता है

और जब हम पूरी तरह संवर जाते हैं
ईश्वर अपने आपको हमें सौंप देता है
संवरी मूर्तियां केंद्र से
अलग नहीं रहतीं
ईश्वर या तो उसमें विलय होता है
या उन्हें अपने में
लीन कर लेता है।

– रामधारी सिंह 'दिनकर'

सत्य की खोज

... एक बात और मेरे मन में पक्की होती जा रही है कि जो कुछ मेरे लिए संभव है, यह एक बच्चे के लिए भी संभव है। यह बात मैं ठोस कारणों के आधार पर कह रहा हूँ। सत्य की खोज के साधन जितने कठिन हैं, उतने ही आसान भी हैं। अहंकारी व्यक्ति को वे काफी कठिन लग सकते हैं और अबोध शिशु को पर्याप्त सरल।

सत्य के खोज को धूलि के कण से भी अधिक विनम्र होना चाहिए। धूलि कणों को तो दुनिया अपने पैरों तले रौंदती है, लेकिन सत्य का खोजी इतना विनम्र होना चाहिए कि उसे धूलिकण भी रौंद सकें। तभी, और केवल तभी, उसे सत्य के दर्शन सम्भव होंगे।

सत्य एक विशाल वृक्ष की तरह है। आप जितना उसका पोषण करेंगे, उतने ही ज्यादा फल यह देगा। सत्य की खान को जितना ही गहरा खोदेंगे, सेवा के नये–से–नये मार्गों के रुप में, यह उतने ही अधिक हीरे–जवाहरात देगा।

मेरे विचार में, इस संसार में निश्चिंतताओं की आशा करना गलत है – यहाँ ईश्वर अर्थात सत्य के अलावा और सब कुछ अनिश्चित हैं। जो कुछ हमारे चारों ओर दिखाई देता है अथवा घटित हो रहा है, सब अनिश्चित है, अनित्य है। बस, एक ही सर्वोच्च सत्ता यहाँ है जो गोपन है किंतु निश्चित है, और वह व्यक्ति भाग्यशाली है जो इस निश्चित तत्व की एक झलक पाकर उसके साथ अपनी जीवन नैया को बांध देता है। इस सत्य की खोज ही जीवन का परमार्थ है।

सत्य की खोज में क्रोध, स्वार्थ, घृणा आदि विकार स्वभावत: छूटते जाते हैं अन्यथा सत्य की प्राप्ति असंभव ही हो जाए। जो व्यक्ति वासनाओं के वश में है, उसकी नीयत साफ होने पर भी वह कभी सत्य की प्राप्ति नहीं कर सकेगा। सत्य की खोज में सफलता प्राप्त होने पर मनुष्य प्रेम और घृणा, सुख और दुःख आदि के द्वंद्वों से पूर्णत: मुक्त हो जाता है।

– 'महात्मा गाँधी के विचार' से साभार, पृष्ठ क्र. ४०–४१

आज की समाज रचना

६५ उम्र के सभी जनप्रतिनिधि स्वयं निवृत्त हो जाएं

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संस्थापक स्व. डॉ. भवरलालजी जैन एक गंभीर लेखक एवं चिंतक थे। हम आपकी मराठी कृति 'आज की समाज रचना' से 'पुनर्विचार हेतु सहायक पार्श्वभूमि' विषयक यह महत्त्वपूर्ण लेख का शेष भाग पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं। **– संपादक**

मेरा भारत महान की केवल उदघोषणा न करके उसमें अन्तर्निहित भावों के अनुरूप भारत निर्माण की संकल्पना को साकार करने के लिए समाजशक्ति को लगना चाहिए। प्रशासन की पुनर्रचना में निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण तथ्यों और सिद्धांतों का उपयोग किया जा सकता है।

सर्वप्रथम सरकार और प्रशासन को अपने प्रचलित सुरक्षा घेरे को तोड़ना होगा। अपनी सुरक्षा प्रशासन का मूल-मंत्र बन चुका है। अपनी सुरक्षा के लिए अपेक्षित कारणों का आधार प्रशासन ने बना रखा है। अपने बचाव के लिए प्रशासन ने तर्कसंगत उपायों की श्रृखंला बना रखी है। ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार और समाजहित का एक दूसरे से कोई लेना देना ही नहीं है। ऐसी व्यवस्था उन्होंने स्वयं निर्माण की है, आज प्रशासन अपने ही कल्याण के लिए स्वयंभू की तरह इन संस्थाओं तथा इनकी सुविधाओं का उपयोग कर रहा है। प्रशासन के दोनों अंगों में अन्तर्निहित सुरक्षा नीतियों का उपयोग हेतु निम्नलिखित परिवर्तन उपयोगी हो सकते है।

राजपत्रित अधिकारियों के अतिरिक्त अन्य सभी महत्त्वपूर्ण अधिकारियों के संविधान प्रदत्त अधिकारों में पर्याप्त कटौती करने की नितांत आवश्यकता है। नियुक्ति करते समय पहले उनका कार्यकाल अधिकतम पाँच वर्षों का हो। इस समयान्तराल में उनकी कार्य क्षमता और प्रणाली का अवलोकन कर कार्यकाल में वृद्धि की जानी चाहिए। उनके कार्यो और उसके परिणामों की जांच स्वतंत्र और निष्पक्ष मंडल की ओर से की जाए। इसके पश्चात् जनप्रतिनिधियों और संबंधित अधिकारियों की आख्या प्राप्त की जाए, जिसके सकारात्मक और नकारात्मक बिन्दुओं को एक पंजिका में लिखा जाएं। इन बिन्दुओं को उचित महत्त्व दिया जाए। प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा करने लिए सभी महत्त्वपूर्ण पदों पर विशेषकर तकनीकी विषयों से संबंधित पदों पर बाहर के व्यावसायिकों की नियुक्ति के लिए द्वार खोल दिये जाएं। इस प्रकार प्रशासनिक पदों की भरती के लिए सनदी परीक्षाओं चयनित, विभागीय प्रोन्नति और बाहर के व्यावसायिकों में से चुने जाने के चयन की प्रक्रिया त्रिस्तरीय होनी चाहिए। इससे सुरक्षितता के कारण पैदा हुई दीर्घसूत्रता, सुस्ती और निष्क्रियता के वातावरण में कमी आएगी। उसके स्थान पर उत्तरदायित्व और कर्तव्यपरायणता की भावना का विकास होगा।

विधायिका के अन्तर्गत जनप्रतिनिधियों, विधायकों और सांसदों को अधिकतम दस वर्षो तक अपने पद पर बने रहने का प्रावधान होना चाहिए। किसी भी दशा में जनप्रतिनिधि दस वर्षो से अधिक समय तक अपने पदों पर न रहें। इन प्रावधानों से होने वाले संभावित खतरों की ओर भी ध्यान देना चाहिए। राज्यसंस्था की व्याप्ति और गुत्थी को समझने के लिए विवेकपूर्ण दृष्टि और प्रदीर्घ अनुभव की आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता है। अनुभवहीन या अल्प अनुभवी जनप्रतिनिधियों के महत्त्वपूर्ण पदों पर आने से गड़बड़ी, जटिल एवं हास्यास्पद स्थिति उत्पन्न हो सकती है। (वर्तमान में इनके कार्यकाल की कोई मर्यादा नहीं है, इसलिए ऐसा हो रहा है।) जहाँ तक अनुभव की बात है, इसमें सामाजिक जीवन और स्थानीय निकायों का अनुभव भी सार्थक व उपयोगी सिद्ध हो सकता है। विवेक, बुद्धि और दूरदर्शिता का संबंध उम्र और अनुभवों से उतना नहीं होता जितना सुसंस्कारिता, वाचन, मित्रता, लगन, आनुवंशिकता से होता है। अत: जनप्रतिनिधियों के कार्यकाल का सीमा निर्धारण अपरिहार्य है। संभवत: यह औषधि रोग से अधिक भयावह प्रतीत होती हो। किंतु आज के क्षोभजनक वातावरण के लिए ऐसे ही उपाय युक्तिसंगत प्रतीत होते हैं। अन्यथा आज के वातावरण में प्रजातंत्र में भाई-भतीजावाद, वंशवाद का प्रारम्भ, प्रवेश और प्रयोग निरंतर चलते रहेंगे। लोकनायक जयप्रकाश नारायण के द्वारा किया गया संपूर्ण क्रांति का प्रयास उस समय उतना यशस्वी सिद्ध नहीं हुआ, लेकिन अब ऐसा प्रतीत होता है कि वह अत्यंत आवश्यक है।

डॉ. भवरलालजी जैन

इसी प्रकार यह भी नियम बनना चाहिए कि साठ वर्ष की उम्र के पश्चात् कोई भी व्यक्ति चुनाव न लड़ सके। इससे पैसठ वर्ष की उम्र तक सभी जनप्रतिनिधि स्वयं ही निवृत्त हो जाएंगे। उसके पश्चात् वे सज्जनशक्ति के साथ मिल कर सामाजिक कार्य करें,उसे सबल बनायें और नैतिक सत्ता प्राप्त करें। चुनाव के पश्चात निर्वाचित उम्मीदवार अपने दल के प्रतिनिधि न होकर जनता के प्रतिनिधि के रूप में काम करना चाहिए। चयनित होने के पश्चात उम्मीदवार की स्वतंत्रता बनी रहनी चाहिए। इनको पार्टी के निर्देशों से परे रखना चाहिए। प्रतिनिधियों को किसी मुद्दे पर बहस के समय अपने विवेक के अनुसार मत देने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री के पद पर विराजमान व्यक्ति की निष्ठा अपने गाँव, तहसील, जिले, प्रदेश की भावना से परे, संपूर्ण प्रदेश या देश के प्रति एक सी भावना होनी चाहिए। वर्तमान समय में उनकी निष्ठा त्रिविध होती है। मंत्रिमंडल में उन्हें पद और गोपनीयता की शपथ लेनी पड़ती है। जिसके कारण उनकी निष्ठा मात्र अपने पद और अपने मंत्रिमंडल के प्रति होती है। उनकी दूसरी निष्ठा अपने दल एवं तीसरी निष्ठा सभी मतदाताओं के प्रति होनी चाहिए। मंत्रिमंडल में ली गई गोपनीयता की शपथ के कारण वह अपने दल की सभा में होने वाली चर्चा में स्वतंत्र रूप से भाग नहीं ले सकता है। विनोबा की यह राय आज भी उतनी ही व्यावहारिक प्रतीत होती है।

क्रमश:

फाउण्डेशन की गतिविधियां

हिंसा के चक्र को तोडना है तो पहले खुद को बदलें – डॉ. अरुण गाँधी

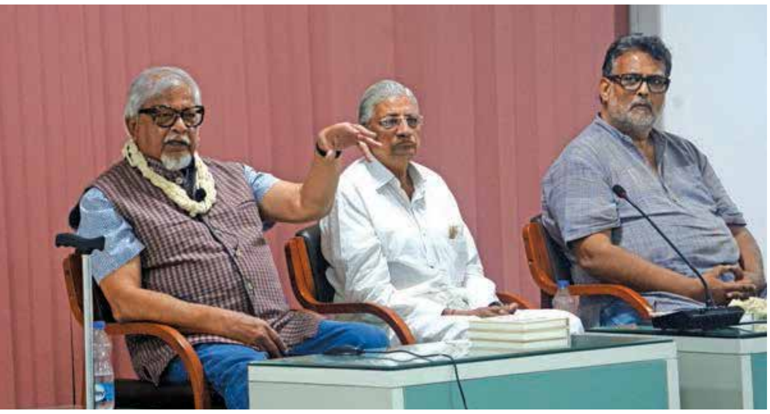

'भाऊंचा कट्टा' कार्यक्रम के दौरान दर्शकों को संबोधित करते डॉ. अरुण गाँधी

जैन हिल्स पर आयोजित 'भाऊंचा कट्टा' इस मंच का दूसरा पुष्प प्रस्तुत करने के लिए महात्मा गाँधी के पौत्र डॉ. अरुण गाँधी तथा प्रपौत्र तुषार गाँधी उपस्थित थे। डॉ. अरुण गाँधी ने अपने दादाजी महात्मा गाँधी से जुड़े छोटे-छोटे प्रसंगों से बहुत बड़ी सीख कैसे मिली उसके रोचक तथ्य प्रस्तुत किए।

डॉ. अरुण गाँधी कहते है कि पूरे हिंसा के दौर में शारीरिक हिंसा की शाखा कभी बढ़ी ही नहीं पर जिसे हम हिंसा नहीं कहते द्वेषपूर्ण विचार, उद्गार, हमारी उपभोग करने की क्षमता, सामग्री का बिगाड़ आदि, इन सारी चीजों की सूची बढ़ती ही गई है। डॉ. अरुण गाँधी ने एक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि केवल अमेरिका में हर साल अरबों रुपये का अन्न अच्छा होने के बावजूद भी फेंक दिया जाता है, वह भी उस स्थिति में जहाँ विश्व की आधी से भी ज्यादा आबादी कुपोषण में जीती है। इसका दोष हर उस व्यक्ति पर आता है जिसने अपनी जरूरत से ज्यादा उपभोग किया है या व्यय किया है। चाहे वे अन्न हो, बिजली के उपकरण हो, पेपर हो, या ऐसे कोई भी सामग्री जिसका अतिरेक प्रयोग हो रहा हो। यह सीख मेरे विचारों में घर कर गई और मेरा अहिंसा के प्रति देखने का नजरिया बदल गया। लड़ाई और मारकाट करने वाली हिंसा को बढ़ावा देने का कारण तो ऐसे बिंदु से पसार होते हैं। इस सिलसिले में बापू से यह तत्त्व सीखा है कि इस हिंसा के चक्र तो तोड़ना है तो पहले खुद को बदलना पड़ेगा, और अपने आपको तब बदला जा सकता है जब हम निष्ठापूर्वक हमारे दोषों को देखें और सुधारने के लिए प्रामाणिक प्रयास करें।

आज हमें देश को बदलना है तो इसके नागरिक को बदलना होगा, अगर हिंदुस्तान का नागरिक संभल जाए और अपने दायित्व के आधार पर बदलने लगे तो आज भी यह संभव है कि हिंदुस्तान विश्व का प्रेरणा तीर्थ बन सकता है। सामूहिक हित की बात करते हुए डॉ. अरुण गाँधी ने कहा कि वैश्विक खुशी का रास्ता व्यक्ति के केंद्र से गुजरता है। आज जीवन का आधार भौतिक हो गया है इस स्थिति में हम सब लोग अधिक अमीर बनने की दिशा में आगे बढ़ते हुए अधिक शक्तिशाली बनना चाहते हैं। यही वजह है कि राष्ट्र और विश्व के बीच संघर्ष पनप रहा है। जिंदगी वह नहीं है जो अमीर बनने में काट दी जाए, वह उस प्रणाली का नाम है जहाँ हम लोगों की खुशी के वाहक बन जाएं।

उक्त कार्यक्रम में दलिचंद जैन, जैन इरिगेशन के वरिष्ठ समूह, वरिष्ठ पत्रकार, जलगाँव शहर से पधारे गणमान्य समूह तथा फाउण्डेशन के कार्यकर्ता उपस्थित थे।

♦♦♦

कस्तूरी-गंध किताब का विमोचन

बा-बापू १५० जयंती पर कस्तूरबा के योगदान को याद करते हुए उनपर मराठी भाषा में डॉ. विश्वास पाटील ने 'कस्तूरी-गंध' नामक उपन्यास लिखा है। इस उपन्यास का प्रकाशन फाउण्डेशन द्वारा किया गया है। जैन हिल्स पर ९ दिसम्बर २०१८ को इस उपन्यास का विमोचन गाँधीजी के प्रपौत्र डॉ. अरुण गाँधी के कर कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर गाँधीजी के प्रपौत्र तुषार गाँधी, फाउण्डेशन के संचालक मंडल के सदस्य दलिचंद जैन, मीडिया विभाग के वरिष्ठ पत्रकार, फाउण्डेशन के कार्यकर्ता तथा नगर जन उपस्थित थे। ♦♦♦

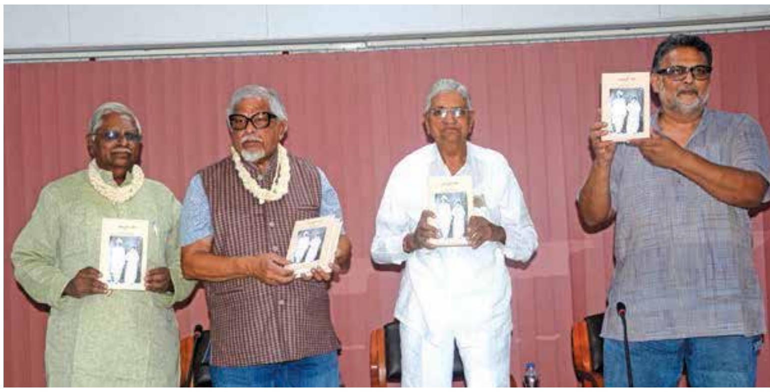

कस्तूरी गंध का विमोचन – लेखक डॉ. विश्वास पाटील, अरुण गाँधी, दलिचंद जैन एवं तुषार गाँधी

'भाऊंचा कट्टा' कार्यक्रम श्रृंखला की शुरुआत

पद्मश्री भवरलालजी जैन ने अपने जीवन के दौरान कई कार्यों में चैतन्य का निर्माण किया है। वैचारिक आदान-प्रदान उनके जीवन के नजदीक रहा है इसलिए उनके द्वारा निर्मित कई साहित्य सृष्टि में सामाजिक उत्तरदायित्व की बुनियाद दिखाई देती है। जैन इरिगेशन परिवार तथा भवरलाल एवं कांताबाई जैन फाउण्डेशन के संयुक्त प्रयास से निर्मित भाऊंचा कट्टा इस कार्यक्रम की शुरुआत की गई है।

रूपरेखाः वैचारिक आदान-प्रदान के लिए एक मंच का निर्माण होना चाहिए, इस विचार के आधार पर जैन इरिगेशन सिस्टम्स लि. के अध्यक्ष एवं गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संचालक अशोक जैन की कल्पना से 'भाऊंचा कट्टा' साकार हुआ है। इस मंच का उद्घाटन एवं प्रथम पुष्प डॉ. प्रकाश एवं मंदाकिनी आमटे दंपति द्वारा प्रस्तुत किया गया था। ♦♦♦

किसान मंडल सब्जी विक्रय केंद्र का आरंभ, जैन प्लास्टिक पार्क, जलगाँव

मूल्य शिक्षा के माध्यम में बच्चों में संस्कार सिंचन किया जाए - अंबिका जैन

खर्ची गाँव अपने निर्माण की कहानी में एक कदम आगे बढ़ा

मौसम के अनुरूप सब्जियों में उत्पादन प्राप्त होते ही बाजार भाव निम्न स्तर पर पहुँच जाते हैं, नतीजा यह होता है कि किसानों को सब्जियों के उचित दाम नहीं मिलते। कई बार तो ऐसा भी देखने को मिलता है की सब्जियों को रास्ते के किनारे फेंक दिया जाता है, इसमें किसान के और प्राकृतिक सभी तरह के संसाधन का व्यय होता है। इस मुद्दे को ध्यान में रखते हुए फाउण्डेशन ने सब्जी उत्पन्न करने वाले किसानों का मंडल बनाने का निर्धार किया। इस मंडल के द्वारा किसानों को सब्जी का चक्र, मौसम के अनुरूप तथा अन्य सब्जियों की जानकारी, पानी का योग्य नियोजन एवं बाजार विपणन व्यवस्था के संदर्भ में समय-समय पर मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

इस मंडल का पहला दौरा जलगाँव स्थित जैन हिल्स पर रखा गया था, उसमें करीब ३० किसान सम्मिलित हुए थे। इस दौरे में विदेशी सब्जियों की जानकारी एवं उनको लगाने की विधि का प्रत्यक्षीकरण जैन इरिगेशन के कृषि विशेषज्ञ संजय सोनजे एवं उनकी टीम ने करवाया। सामाजिक जागरूकता एवं विपणन व्यवस्थापन के संदर्भ में फाउण्डेशन के कार्यकर्ता डेविड जेबराज एवं विनोद रापतवार ने किसानों को मार्गदर्शन प्रदान किया।

उपरोक्त सभी प्रयासों के बाद खर्ची गाँव में सब्जी उत्पन्न किसान मंडल का गठन किया गया। पर हमने यह जाना की बाजार में हमारे किसान को सब्जियां बेचने के लिए कुशलता का अभाव दिखाई देता है, तब फाउण्डेशन ने प्रशिक्षण प्रदान कर बाजार भी उपलब्ध करवाया। जैन इरिगेशन सिस्टम्स लि. के प्लास्टिक पार्क में करीब ४ हजार लोग कार्य करते है, अगर यहाँ सब्जी बेचने की व्यवस्था कि जाए तो किसानों को अच्छे बाजार के साथ अच्छे दाम भी मिलेंगे। इस बात को आगे बढ़ाई और सफलता हासिल हुई, १७ जनवरी के दिन किसान मंडल सब्जी बिक्री केंद्र का आरंभ किया गया। इससे हमारे किसानों में हौसला आया और प्रति दिन करीब सौ किलो से अधिक की सब्जी बिक्री होने लगी। पहले के मुकाबले खर्ची के किसान अपनी उगाई हुई सब्जी के अच्छे दाम प्राप्त करने लगे। इस महत्त्वपूर्ण कार्य के द्वारा हमारे किसान की आर्थिक उन्नति में इजाफा हुआ और खर्ची गाँव अपने निर्माण की कहानी में एक कदम आगे बढ़ा।

इस पूर्ण प्रक्रिया में फाउण्डेशन के ग्रामीण कार्यकर्ता चंद्रकांत चौधरी, राजेंद्र जाधव, आशुतोष कुमठेकर एवं प्रशांत सूर्यवंशी ने लोगों को संगठित करने में आवश्यक योगदान दिया। ♦♦♦

'ग्रीन स्कूल' संकल्पना का आरंभ

बा-बापू १५० के अंतर्गत मूल्य शिक्षा कार्यक्रम खर्ची गाँव की प्राथमिक शाला में कार्यान्वित किया गया। मूल्य शिक्षा की संकल्पना की नींव में बच्चे शिक्षा का अनुभव लेते हुए शरीर, मन और आत्मा का विकास करें। इस तरह की शिक्षा पद्धति का निर्माण करने के लिए छात्रों को अनुभव आधारित शिक्षा में सम्मिलित करना चाहिए। हमने यह पाया कि खर्ची गाँव की शाला के परिसर में कोई पेड़ नहीं है, अगर बच्चों के माध्यम से इस परिसर को हरा भरा बना सकते है तो यह उनके लिए परिश्रम, पर्यावरण एवं स्वावलंबन की अच्छी शिक्षा भी होगी। इसी संकल्पना के आधार पर ग्रीन स्कूल कि दिशा में आगे बढ़ते हुए जैन इरिगेशन के कृषि विद्वान के साथ विचार-विमर्श कर जनवरी के समय में लगाए जाने वाले पेड़ का चयन किया गया। साथ साथ यह भी जाना की फल के पेड़ भी लगाया जा सकता है जिससे बच्चों को पोषण भी मिले। कार्य का आरंभ किया गया और हमारे ग्रामीण कार्यकर्ता के समूह ने स्थानीय लोगों एवं छात्रों के साथ मिलकर शाला परिसर में मिट्टी डाल कर गार्डन की जगह को अधिक अच्छा बनाया। ९ जनवरी २०१९ को फाउण्डेशन के अंबिका जैन ने पेड़ लगाकर इस शुभ कार्य का आरंभ किया गया। परिसर में फल पौधे जैसे आम, अमृत, जामुन, बैर, सहजन के पेड़ लगाए गए। अंबिका जैन ने अपने संबोधन में कहा कि मूल्य शिक्षा के माध्यम से बच्चों को संस्कार सिंचन की दिशा में आगे बढाना चाहिए एवं गाँव में संपूर्ण स्वच्छता, संगठन की भावना, जल व्यवस्थापन जैसे महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर लोक भागीदारी से आगे बढ़ते रहेंगे। शाला के मुख्याध्यापक चित्ते साहब एवं शिक्षक वृंद, खर्ची गाँव के सरपंच महत्त्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम में फाउण्डेशन के डेवीड जेबराज, विनोद रापतवार, आशुतोष कुमठेकर, सुधीर पाटील एवं ग्रामीण कार्यकर्ता उपस्थित थे। ♦♦♦

'एक पौधा तुम भी लगाओ, अपनी शाला तुम भी सजाओ...'

ग्रंथालय परिसंवाद में गाँधी तीर्थ की सहभागिता

३० नवम्बर और १ दिसम्बर २०१८ के दौरान National Conference on Revamping of Academic Libraries for Next Generation का आयोजन महाराष्ट्र विद्यापीठ एवं कालेज लाइब्रेरी एसोसिएशन, भारतीय ग्रंथालय संघ और कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ के संयुक्त उपक्रम से किया गया था। २ दिवसीय चले इस परिसंवाद में महाराष्ट्र के विद्यापीठ व कालेज के २४८ ग्रंथपाल शामिल हुए थे। इस कांफ्रेंस में ग्रंथालय में वर्तमान प्रवाह के अनुरूप बदलते स्वरूप के साथ पद्धति, नीति, भूमिका के बारे में गहन चर्चा हुई। इस परिसंवाद में करीब २०० से अधिक शोध लेखों का समावेश किया गया था, उनमें गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के ग्रंथपाल अशोक चौधरी ने 'Jains Library: Sustainable (Green) library' शीर्षक से लेख प्रस्तुत किया था। इस लेख में पर्यावरण पूरक ग्रंथालय के मानदंड, उनकी आवश्यकता व आचार संहिता का जिक्र किया गया है। इस विषय को न्यायपूर्ण रूप से प्रस्तुत करने के लिए गाँधी तीर्थ व अनुभूति अंतरराष्ट्रीय स्कूल स्थित ग्रंथालय का संदर्भ प्रस्तुत किया गया। ♦♦♦

पुस्तकालय प्रदर्शन

पुस्तकालय प्रदर्शन में मुलाकात करते गणमान्य

ग्रंथालय संचालक मंडल व जिला ग्रंथालय अधिकारी कार्यालय की ओर से पढ़ने की आदत को बढ़ावा देना एवं सभी किताबों को एक ही जगह पर प्रदर्शित करने के उद्देश्य से इस ग्रंथ उत्सव का आयोजन किया गया था। इस प्रसंग पर विभिन्न कार्यक्रम जैसे ग्रंथ यात्रा, कवि सम्मेलन, परिसंवाद, व्याख्यान, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विभिन्न किताबों के स्टाल का सफल आयोजन किया गया था। इसमें गाँधी तीर्थ स्टाल का समावेश भी किया गया था, इस स्टाल में गाँधी तीर्थ ग्रंथालय व अभिलेखागार में उपलब्ध ग्रंथों की जानकारी, पाठक व शोधार्थियों के लिए उपलब्ध सुविधा, गाँधी तीर्थ संग्रहालय कि विशेषता, फाउण्डेशन द्वारा कार्यरत बा–बापू १५० के अंतर्गत होने वाले रचनात्मक कार्यों को भी दर्शाया गया था। इस अवसर पर जलगाँव के मान्यवर, ग्रंथपाल भाईयों–बहनों एवं जनसमूह ने बड़ी मात्रा में मुलाकात ली थी। फाउण्डेशन की और से ग्रंथपाल अशोक चौधरी, सुरेश पाटील तथा डिगंबर कोली ने अपनी भूमिका अदा की। ♦♦♦

सुरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम

गाँधी तीर्थ पर हर रोज कई मुलाकाती आते हैं, उनमें बच्चों से लेकर बुजुर्ग तक का समावेश होता है। जब इतने लोग आते हैं तो सुरक्षा के माध्यम व व्यवस्था को सुनिश्चित करना स्वाभाविक हो जाता है। इस

सुरक्षा कार्यक्रम में उपस्थित फाउण्डेशन के सहकारी वृंद

उद्देश्य से फाउण्डेशन के प्रांगण में एक सुरक्षा कार्यक्रम का प्रत्यक्षीकरण किया गया। इस प्रत्यक्षीकरण को अंजाम देने के लिए राष्ट्रीय आपदा राहत बल (NDRF) की टीम अपनी आवश्यक सामग्री के साथ उपस्थित थी। आपात कालीन स्थिति में CPR (Cardio-Pulmonary Resuscitation) के प्रयोग के द्वारा व्यक्ति की जान कैसे बचाई जाती है इस विषय में प्रत्यक्षीकरण प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम में फाउण्डेशन के करीब ३५ से अधिक लोगों ने हिस्सा लिया। ♦♦♦

युवा चेतना प्रशिक्षण – खर्ची ब्रुद्रुक, खर्ची खुर्द

बा–बापू १५० के अंतर्गत कार्यरत चयनित गाँवों में युवा शक्ति को पहचानकर उनकी ऊर्जा को सामुदायिक विकास कार्यों में प्राप्त करने के उद्देश्य से युवा चेतना कार्यक्रम चलाया जाता है। ३० नवम्बर २०१८ को गाँधी तीर्थ परिसर पर खर्ची खुर्द और खर्ची बुद्रुक गाँवों के युवाओं का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में ५६ युवा लड़के–लड़कियां और दो आंगणवाडी कार्यकर्ता तथा एक आशा कार्यकर्ता सम्मिलित हुए थे। इस समूह को प्रथम जैन हिल्स व जैन वेली स्थित जल प्रबंधन के सृजनात्मक कार्यों तथा विभिन्न फलों की खेती का परिचय करवाया गया। गाँधी तीर्थ पर आयोजित सत्र में सर्व प्रथम उपस्थित सभी युवा एवं फाउण्डेशन की टीम का परिचय किया गया। बाद में, सौ. अंबिका जैन ने बा–बापू १५० की जानकारी साझा करते हुए महिला सशक्तिकरण, ग्रामीण आरोग्य, स्वच्छता, मूल्य शिक्षा के महत्त्व को संकलित करते हुए समग्र विकास की परिभाषा को स्पष्ट किया। उपस्थित प्रशिक्षणार्थियों को थीअरी ऑफ चेंज के अंतर्गत अपने–अपने गाँव में किए जाने वाले बदलाव तथा विकास कार्यों के लिए ५ समितियां बनाई गईं और प्रत्यक्ष कार्य को आगे बढ़ाने का निर्णय लिया गया। उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में फाउण्डेशन के विनोद रापतवार, सुधीर पाटील, आशुतोष कुमठेकर तथा चंद्रकांत चौधरी की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही। ♦♦♦

संवाद प्रक्रिया में व्यस्त विनोद रापतवार व युवागण

'एक अकेला थक जाएगा मिल कर बोझ उठाना साथी हाथ बढ़ाना...' रामदेववाडी में स्वच्छता अभियान में जुटा फाण्डेशन के कार्यकर्ताओं का समूह

खर्ची, शेरी, रामदेववाडी गाँवों में स्वच्छता की पहल

रामदेववाडी:

ग्रामीण समुदाय की उन्नति यह फाउण्डेशन के संस्थापक बड़े भाऊ (भवरलालजी जैन) का स्वप्न रहा है, इसलिए कई गाँवों में शिक्षा, स्वच्छता, आरोग्य, पानी, कृषि आधारित कई कार्य के वे प्रेरक रहे हैं। १२ दिसम्बर परम श्रद्धेय बड़े भाऊ का जन्मदिन है। हर साल आसपास के गाँव में फाउण्डेशन परिवार द्वारा बड़े भाऊ को समर्पित करते हुए रचनात्मक कार्य करते हैं। भाऊ के इस ८१वें जन्मदिन के पूर्व ११ दिसम्बर २०१८ को जलगाँव के रामदेववाडी गाँव में सभी कार्यकर्ता मिलकर स्वच्छता कार्य को अंजाम दिया। प्राथमिक शाला परिसर तथा गाँव के मुख्य जगहों से बहने वाले जल निकास नालियों को साफ किया गया। इस कार्य में फाउण्डेशन के सभी कार्यकर्ता ने समर्पित भाव से अपना योगदान अर्पित किया। रामदेववाडी के लोगों की सहभागीता सराहनीय रूप से प्राप्त हुई।

खर्ची:

स्वच्छता को एक संस्कार के रूप में हमें देखने की आवश्यकता है, अगर इस नजरिये को समुदाय में स्थापित कर पाए तो यह बड़ी जंग जीतने के समान ही है। फाउण्डेशन ने बा-बापू १५० के अंतर्गत प्रमुख रूप से किए जाने वाले कार्यों में स्वच्छता को स्थान दिया गया है। इस धागे को पकड़कर ७ दिसम्बर २०१८ को खर्ची खुर्द गाँव की प्राथमिक शाला परिसर की सफाई की गई। इस कार्य में युवा चेतना प्रशिक्षण प्राप्त किए युवा तथा आंगणवाडी व आशा कार्यकर्ता सम्मिलित हुए थे। खास तौर पर खुले में शौच जाने वाले लोगों को अपने घर पर बंधे शौचालय का इस्तेमाल करने का आह्वान किया गया। इसी श्रृंखला की दूसरी कड़ी १४ दिसम्बर को संपन्न हुई, उसमें खर्ची खुर्द गाँव की चार गलियों को स्थानिक युवाओं के साथ मिलकर स्वच्छ की गई। इस कार्य में फाउण्डेशन के चंद्रकांत चौधरी, प्रशांत सूर्यवंशी तथा मयूर गिरासे ने अपना योगदान दिया।

शेरी:

हमारे कई गाँवों में प्रशासन द्वारा महिला सामुदायिक शौचालय का निर्माण किया गया तो है पर ठीक तरह से उनका उपयोग नहीं किया जाता है। फाउण्डेशन द्वारा कई गाँवों में बंद पड़े सामुदायिक शौचालय को दुरुस्त कर प्रयोगकर्ताओं का समूह बनाकर उनको संभालने की जिम्मेदारी दी जाती है। ऐसा ही एक कार्य फाउण्डेशन द्वारा जलगाँव के शेरी गाँव में किया गया है। शेरी गाँव में बंद पड़ा हुआ महिला सामुदायिक शौचालय को लोक भागीदारी के माध्यम से प्रयोग करने जैसी स्थिति में लाया गया एवं परिसर में स्थित अनावश्यक जंगली पौधे को दूर किया गया। इस कार्य में शेरी गाँव के सरपंच, आंगणवाडी सेविका, युवा तथा फाउण्डेशन के कार्यक्रता सम्मिलित हुए थे। •••

मोतियाबिंद जांच कार्य में व्यस्त कांताई नेत्रालय के अधिकारी गण

टाकरखेड़ा, कढ़ोली गाँवों में मोतियाबिंद शिविर

४ दिसम्बर २०१८ के दिन फाउण्डेशन एवं कांताई नेत्रालय के संयुक्त उपक्रम से टाकरखेड़ा और कढ़ोली गाँवों में मोतियाबिंद शिविर संपन्न हुआ। टाकरखेड़ा में करीब ६९ ओपीडी मरीज की जाँच की गई उनमें से ५ मरीज की शस्त्र क्रिया करने का निश्चय किया गया। तथा धानोरे, खेड़ी और कढ़ोली तीनों गाँवों से करीब १२३ मरीजों की जाँच की गई उनमें से ४ मरीज की शस्त्र क्रिया करने का निश्चय किया गया। आरोग्य से संबंधित इस कार्य में कांताई नेत्रालय की टीम तथा जैन इरिगेशन के विजयसिंग पाटील, फाउण्डेशन के सुधीर पाटील, राहुल लांबोले तथा राजेंद्र जाधव ने अपना बहुमूल्य योगदान प्रदान किया। •••

सहकार ही असरदार

'सहकार ही असरदार' को सार्थक करते खर्ची गाँव के युवा

फाउण्डेशन के द्वारा सहकारिता के प्रयास को बढ़ावा देने के लिए बा-बापू १५० के अंतर्गत चयनित गाँवों में प्रयास किया जा रहा है। इस प्रयास के अंतर्गत खर्ची खुर्द गाँव में श्री गणेश किसान गुट द्वारा अपनी बचत से सामूहिक वज़न काटा खरीदा गया और खर्ची गाँव के किसानों को किराये से प्रदान किया जा रहा है। इससे पहले इस गाँव में खेत उत्पादन सामग्री का तौल करने के लिए वज़न काटा पास के शहर से लाया जाता था, उनमें कई तरह के खर्च के साथ साथ समय की भी बरबादी होती थी। फाउण्डेशन के इस प्रयास से गाँव में आजीविका का निर्माण, समय की बचत एवं जन सुविधा में इजाफा हुआ। ◆◆◆

'माँ-बाबा पुरस्कार' से कालगी दंपति सम्मानित

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन पुरस्कृत वर्धा नई तालीम समिति-२०१८ के माँ-बाबा पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न हुआ।

नई तालीम समिति शांति भवन के नासिक स्थित आनंद निकेतन स्कूल की संचालिका सौ. विनोदिनि एवं वादिराज कालगी को यह छठा पुरस्कार प्रदान किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष स्थान पर नई तालीम समिति के अध्यक्ष डॉ. सुगन बरंठ और प्रमुख अतिथि के रूप में समिति की उपाध्यक्षा उषा राणी उपस्थित थे। ३१ हजार रुपये नकद, मानपत्र ऐसा पुरस्कार का स्वरुप है। वर्धा आनंद निकेतन की शिक्षिका विद्यार्थियों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का प्रास्ताविक प्रदीप दासगुप्ता ने किया। पुरस्कारार्थी विनोदिनि वादिराज द्वारा किये गए कार्य पर बनाई हुई डॉक्युमेंटरी दिखाई गई। पुरस्कार वितरण के पश्चात पुरस्कारार्थी सौ. विनोदिनी पिटके-कालगी ने अपना मंतव्य व्यक्त किया। अध्यक्ष डॉ.

कालगी दंपत्ति को 'माँ बाबा पुरस्कार' प्रदान करते हुए डॉ. सुगन बरंठ, उषा राणी आदि

सुगन बरंठ ने आज की शिक्षण प्रणाली एवं समाज के बारे में भाष्य कर नई तालीम शिक्षण प्रणाली नये संदर्भ एवं रचना के अनुसार समूचे भारत में कैसे कार्यान्वित की जा सकती है, इसके बारे में अपने विचार रखें। इस अवसर पर विद्यार्थियों का किशोर महाबल एवं विजूताई वेले के नाम से छात्रवृत्ति भी प्रदान की गई। कार्यक्रम का सूत्रसंचालन प्रभाकर पुसदकर तथा आभार प्रदर्शन डॉ. शिवचरण ठाकूर ने किया। ◆◆◆

आदिवासी गाँवों में गुंजेगी चरखे की गुंज

समग्र विकास की दिशा में गाँवों को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक है कि महिलाओं को आर्थिक आजादी प्राप्त करने की दिशा में कदम बढ़ाया जाए। फाउण्डेशन ने चरखे के माध्यम से इस दिशा में प्रयास किए जलगाँव के और चोपड़ा तालुका के गाँवों से महिलाएं चरखा प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए फाउण्डेशन के चरखा विभाग में आ रही है। हाल ही में चोपड़ा

चरखा प्रशिक्षण में व्यस्त बोरअजंटी गाँव की महिलाएं

तालुका के बोरअजंटी गाँव से नौ महिलाएं एक सप्ताह के लिए प्रशिक्षण प्राप्त करने पधारी थी। इस प्रशिक्षण में कपास से कपड़े तक की प्रक्रिया को सोलर अंबर चरखे के द्वारा प्रदान की जाती है। प्रशिक्षण के बाद हर एक महिला को खादी और ग्रामोद्योग आयोग के प्रयास से दो सोलर अंबर चरखे प्रदान किए जाते हैं ताकी वे आजीविका प्राप्त कर सकें। ◆◆◆

सहर्ष स्वागत

डेविड जेबराज

मेजर डेविड जेबराज (सेवानिवृत्त) एक पूर्व सेना अधिकारी है। आपके पास प्रशासन, प्रबंधन, संचालन और टीम निर्माण के विषयों में समृद्ध अनुभव है। सेना से सेवानिवृत्त होने के बाद, उन्होंने इंग्लैंड और अफ्रीका में करीब सात साल तक प्रोजेक्ट प्रबंधक के रूप में एक शीर्ष आईटी कंपनी में अपनी सेवा प्रदान की है। मेजर डेविड समाज सेवा के प्रति आत्मीयता का भाव रखते है, विशेष रूप से स्थायी ग्राम अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में एक अलग लगाव है। आप यह मानते है कि हमारे राष्ट्र को नए शिखर पर ले जाना है तो आने वाले समय में हमारी सारी ऊर्जा गाँवों के निर्माण में लगा देनी चाहिए और गाँधीजी की १५०वीं जयंती से अच्छा मौका और कोई नहीं हो सकता। इसी की बदौलत वे गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन से जुड़े है और फाउण्डेशन द्वारा कार्यरत बा-बापू १५० कार्यक्रम के अंतर्गत प्रकल्प प्रमुख की जिम्मेदारी संभाली है। महात्मा गाँधी के सपनों आधारित समुदाय निर्माण के फाउण्डेशन के प्रयासों में वे अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगे। फाउण्डेशन परिवार आपका सहर्ष स्वागत करता है। ◆◆◆

पाठकों के अभिमत

*'**खोज गाँधीजी की**' पत्रिका पर हमें पाठकों के अभिमत हमेशा प्राप्त होते रहते हैं। प्रस्तुत है पिछले अंक के लिए प्राप्त कुछ पाठकों के अभिमत* – ***संपादक***

सारे लेख विचारोत्तेजक, पठनीय एवं चिंतन करने योग्य होते हैं। गाँधीजी को समग्र रुप से जान सके हैं।

संस्था की गतिविधियां प्रशंसनीय है किंतु सिमित क्षेत्र में इसका स्वरुप और अधिक व्यापक होना चाहिए।

कागज की गुणवत्ता एवं छपाई बहुत उत्तम है, विशेष रूप से हमारे जैसे ७० साल के उम्र के व्यक्तियों के लिए। मेरे विचार से यह निःशुल्क न होकर शुल्क रखना चाहिए।

सुरेश श्रोफ

....

खोज गाँधीजी की द्विमासिक हो तो अच्छा है। इसमें छपे लेखों में से गाँधी विचार आधारित लेख हो तो विशेष रुप से लोगों को गाँधी विचार अपनाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

खोज गाँधीजी की में गतिविधियां छपती है उन्हें थोडा कम किया जा सकता है। इस पत्रिका का स्वरुप ठिक ही है। पत्रिका निःशुल्क देनी चाहिए।

***डॉ. राजेंद्र खिमाणी**, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद*

....

Khoj Gandhiji ki Magzine is good and impressive. Contents and topics are well covered. The Autobiography of Mahatma Gandhi sequal gives very valuable massage to readers. Quality of paper is equally good.

Is it possible to publish the same in English? For, the readers in Hindi are very very limited in Karnataka.

If English edition is possible, then we can charge Rs. 1 per copy and same collection fund should go to GRF.

It is a worthy Magzine to publish in Kannada also, so that many reders will be benifited.

***P. V. Joshi**, Sr. Agronomist, Malavalli*

....

खोज गाँधीजी की त्रैमासिक मैं नियमित पढ़ता आ रहा हूँ। त्रैमासिक में प्रस्तुत छपे लेख बहुत ही वैचारिक तथा ज्ञानवृद्धी दिलाने में मददगार होते है। मेरे हिसाब से यह पत्रिका मासिक रुप में देखना चाहता हूँ। इसमें छपे लेख-सर्वसामान्य नागरिक, छात्र, छात्राएँ, अध्यापक को संशोधन कार्य में मददगार साबित होते है। पत्रिका का अंतर्गत तथा बर्हिगत – भाग बहुत ही अच्छा तथा ज्ञानदायक वैचारिक है। पेपर की गुणवत्ता, तस्वीर का चयन और संरचना बहुत ही उत्तम तथा श्रेष्ठ है। मानों गाँधीजी के विचारों का वर्षा हमेशा होती रही ऐसा मालूम होता है। पत्रिका का शुल्क होना चाहिए जैसा की समाज के तथा देहाती भाग के – जनसमूदाय नागरिक उसे पढ़ सके।

***दिपक बाबूलाल शिरसाट**, पी. एच. डी. संशोधक, जामनेर*

♦♦♦

संग्रहालय के अभिमत

*'**खोज गाँधीजी की**' संग्रहालय देखने आए हुए अतिथीयों के अभिमत हमेशा प्राप्त होते रहते हैं। प्रस्तुत है पिछले अंक के लिए प्राप्त कुछ अभिमत* – ***संपादक***

आज जलगाँव स्थित गाँधी तीर्थ की पहली बार मुलाकात की। अत्यंत आधुनिक रुप से पूरी प्रदर्शनी का निर्माण किया गया है। गाँधीजी के जन्म से लेकर आजादी तक का अलग-अलग तरीके से मार्गदर्शन पद्धति से दिखाई गई है। गाँधीजी के पूरे जीवन दृष्टांत का अद्भूत तरीके से मार्गदर्शन मिला हम बहुत ही प्रभावित हुए। बहुत ही प्रेरणादायी और अभिनंदनीय प्रयास है। हमको ये तीर्थ में आने का मौका देने के लिए हम आपके आभारी है।

***डॉ. एल. डी. अवैया**, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद*

....

गाँधीजी का ऐसा विवरण हमने पहली बार देखा। यह बहुत ही सुंदर और अनोखा है। इससे हमें पता चलता है कि गाँधीजी ने कितनी यातनाएं सही और देश को आजाद किया। आपने इस पर बहुत मेहनत की है और इसे बहुत ही सुंदर तरीके से बनाया है। ऐसा हमें दूसरी जगह कहीं भी देखने को नहीं मिलेगा। यह प्रेरणा दायक है।

***सुशिला भंडारी**, बैंगलोर*

....

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन हमें सभी वर्ग समुदाय, धर्म, जाती एवं देश के प्रति शांती का संदेश देता है।

***गोपाल पटेल**, मध्य प्रदेश*

....

The work done at the Foundation is simply awesome and will ensure that the youth are kept focussed in line with Gandhi's life. The journey of the life of the Father of the Nation was wonderful & it was very enriching. The various phases of his life, his values and his selflessness and dedication of his life towards human and national cause are beyond words.

We as a group hope that the same character, if emulated in our daily lives and official work, could do wonders and could be very beneficial in developing our lives and character and we as civil servants would then be able to fulfil his dream, and his Talisman could become our guiding light. Thank you,

Best wishes, Jai Hind

A Team of IAS Officers, 2017 Batch, MP Cadre

♦♦♦

साधुवाद

खोज गाँधीजी की के संदर्भ में हमने अभिप्राय पत्रक प्रेषित किया था, हमारे कई पाठकों ने अपना बहुमूल्य अभिप्राय हमें भेजे हैं। आपके अभिप्राय हमारे लिए आईने के समान बना रहेगा। इस प्रक्रिया में सम्मिलित होने के लिए हमारे सभी पाठकों को साधुवाद अदा करते हैं।

शिवशंकर रेड्डी, कृषि मंत्री, कर्नाटक १२.११.२०१८

अतिथि देवो भव!

महात्मा गाँधी के जीवन एवं उनके कार्यों को गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन स्थित 'खोज गाँधीजी की' संग्रहालय में अत्याधुनिक तकनीक के साथ समन्वित करके युवाओं के लिए कैसे उपयोगी बनाया गया है? इसे देखने व समझने के लिए अतिथियों का स्वाभाविक प्रवाह होता रहता है। अतिथि हमारे लिए देवतुल्य हैं।

डॉ. प्रकाश आमटे, सौ. मंदाकिनी आमटे, हेमलकसा, महाराष्ट्र, २५.११.२०१८

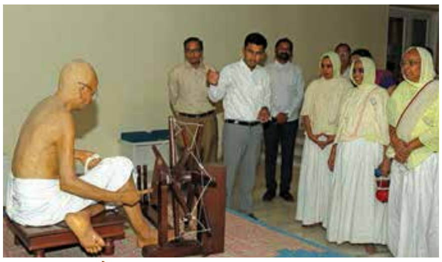
प. पू. श्री सौम्यप्रभाजी म. सा. ठाणा २७.११.२०१८

एन. भारतगुप्ता, आय.ए.एस., विजयवाडा, आंध्रप्रदेश ०२.१२.२०१८

मेजर जनरल राजेश कुंद्रा, नागपूर ०४.१२.२०१८

मनोजकुमार सिन्ना, अधिकारी, मध्य रेल्वे, भुसावल ०४.१२.२०१८

महात्मा गाँधी के पोते डॉ. अरुण गाँधी, अमेरिका ०८.१२.२०१८

शिवाजी भिसे, मीडिया प्रबंधक, जलगाँव १८.१२.२०१८

इकरा हाइस्कूल, जलगाँव १०.०१.२०१९

शुभदा जहागिरदार, मुंबई १२.०१.२०१९

अलबिट्रो झुईन, एबी टेलर, जस्टिन कौर, नेब्रास्का यूनिवर्सिटी, अमेरिका, १५.०१.२०१८

ऑस्कर क्रुज, अमेरिका १८.०१.२०१९

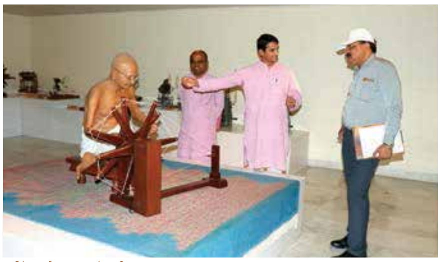
नरेंद्र वैद्य, मुंबई १८.०१.२०१८

जी. एच. रायसोनी कॉमर्स कॉलेज, नागपूर १९.०१.२०१९

९वां इंटरनॅशनल मॉयक्रो इरिगेशन कार्फेस, औरंगाबाद से पधारे अतिथि १९.०१.२०१९

शिल्पा भंडारी, बैंगलोर २०.०१.२०१९

सायली सांभारे, मराठी अभिनेत्री, पुणे २६.०१.२०१९

RNI Title Code:- MAHBIL10001

मोहन से महात्मा

चित्रशृंखला-२२

फैजपुर

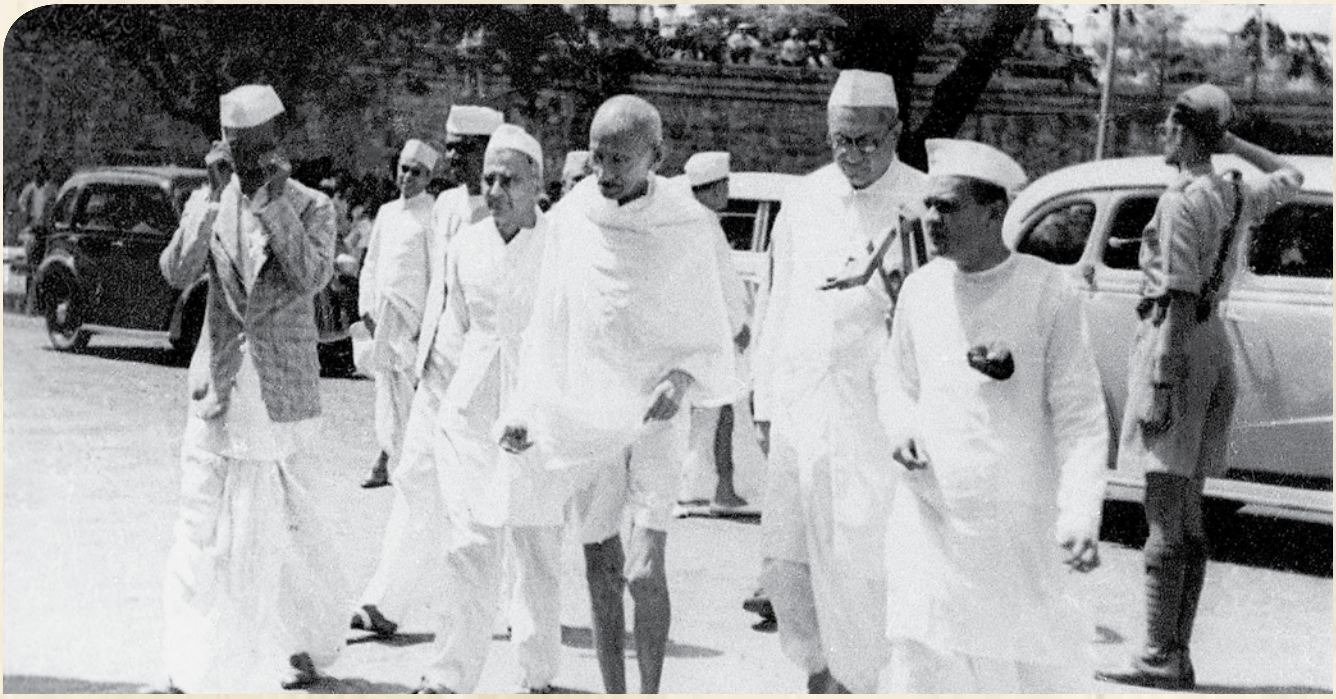

महात्मा गाँधी फैजपुर काँग्रेस की सभा से बाहर आते हुए, दिसम्बर १९३६।

महात्मा गाँधी फैजपुर काँग्रेस की सभा से बाहर आते हुए, दिसम्बर १९३६।

महात्मा गाँधी फैजपुर काँग्रेस की सभा से बाहर आते हुए, दिसम्बर १९३६।

I tender my congratulations to the Maharashtra Provincial Congress Commitee on their decision to hold the next Congress session at Khirdi, a village near Faizpur-another village in East Khandesh. If the plans are properly laid and preparations undertaken in advance. the Reception Committee will be able to putup a brave show at a comparatively less cost than is usually incurred at these annual national gatherings. The conditions are obvious. The Committee must not aim at reproducing a city in the village. That would be doing violence to the whole conception.

- Mahatma Gandhi

पूर्व खानदेश में फैजपुर गाँव के पास खिरड़ी नामक एक अन्य गाँव में काँग्रेस का आगामी अधिवेशन करने का महाराष्ट्र प्रांतीय काँग्रेस कमेटी ने जो निश्चय किया है उसके लिए मैं उसे बधाई देता हूँ। योजना अगर ठिक तरह से तैयार की गई और तैयारियां पहले से शुरु हो गई तो हर साल इस राष्ट्रीय समारोह पर जितना पैसा खर्च होता है उससे कम ही खर्च में स्वागत-समिति काँग्रेस अधिवेशन को अधिक सुंदर और शानदार बना सकेगी। इसके लिए जिन शर्तों का पालन जरुरी है वे स्पष्ट हैं। स्वागत-समिति का ध्येय गाँव में शहर बसा ने का नहीं होना चाहिए। ऐसा करना तो (देहात में काँग्रेस अधिवेशन करने की) सारी कल्पना के साथ हिंसा करना होगा। ।

- महात्मा गाँधी

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह मासिक मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि.जलगाँव-४२५१०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव-४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक - अश्विन भामाभाई झाला।

प्रकाशन: २५ जनवरी २०१९

प्रेषित : २ फरवरी २०१९